पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2020-2022

ओ३म्

शृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२३, अंकः-३, मार्च, सन्-२०२१, सं०-२०७७वि०, दयानंदाब्द १६७, सृष्टि सं० १,६६,०८,५३,१२१; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

इतिहास का पुनर्पाठ

दयानन्द से डरने लगे थे अंग्रेज और पोंगापंथी!

स्वामी जी की सामाजिक क्रांति से भारत की सोयी जनता जाग उठी थी

स्वतंत्रता, शिक्षा और सुधार उनका अंतिम ध्येय था

–विष्णु प्रभाकर–

स्वामीजी के जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटनाओं में एक है, उनका सन् १८७७ के दिल्ली दरबार में आना। वे १७ दिसम्बर, १८७६ रविवार के दिन छलेसर से वहाँ पधारे थे। यह दरबार भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड लिटन ने १ जनवरी, १८७७ को महारानी विक्टोरिया द्वारा 'भारत की साम्राज्ञी' का पद ग्रहण करने के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था। इसमें देश के सभी वर्गों के गणमान्य व्यक्ति आमंत्रित किये गये थे। ब्रिटिश हुकूमत के वैभव और शक्ति का प्रदर्शन ही इसका मुख्य उद्देश्य था। स्वामीजी इस विशाल जनसमूह और प्रमुख व्यक्तियों की उपस्थिति का लाभ उठाकर देशोद्धार की अपनी योजना उनके सामने रखना चाहते थे। और विशेषकर राजाओं से मिलने की उनकी बड़ी इच्छा थी। लेकिन अनेक कारणों से यह सम्भव नहीं हो सका। हो भी नहीं सकता था क्योंकि यदि राजा-महाराजा स्वामीजी की सामाजिक सुधार की योजना को स्वीकार कर लेते तो राजदरबारों के द्वारा अपनी जीविका चलानेवाले पोंगापंथियों का प्रभुत्व समाप्त हो जाता। कश्मीर के महाराजा रणवीर सिंह चाहकर भी स्वामीजी से नहीं मिल सके। इसका एक और भी कारण था और यह अधिक महत्त्वपूर्ण था। गोरे शासकों तक अब यह बात पहुँच चुकी थी कि स्वामीजी द्वारा प्रचारित समाजिक क्रान्ति से भारत की सोई हुई जनता जाग उठी है। यह सामाजिक क्रान्ति किसी भी दिन राजनैतिक क्रान्ति का रूप ले सकती है। सन् १८५७ के विप्लव का प्रभाव लाख प्रयत्न करने पर भी दूर नहीं हो रहा है। इसलिए बहुत संभव है उन्होंने अपरोक्ष रूप से राजाओं को स्वामीजी से मिलने से रोका हो।

स्वामीजी राजाओं से भेंट न कर सके पर उनके मन मे एक प्रश्न निरन्तर घुमड़ता रहा कि हम सब एक कैसे हो सकते हैं? कैसे देश में फैले घोर अंध विश्वास और पाखण्ड का सामना किया जा सकता है। वे जानते थे कि इस दरबार में देशभर के मनीषी और सुधारक आये हैं। उन्होंने उन सभी को एक दिन अपने डेरे पर आमंत्रित किया।

इस सर्वधर्म सम्मेलन का ऐतिहासिक महत्त्व है। सम्भवतः सम्राट अकबर के बाद स्वामीजी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने धार्मिक और सामाजिक एकता के लिए रचनात्मक कदम उठाया था। उनके निमंत्रण पर भारतीय मनीषा के जो उज्ज्वल रत्न उस सम्मेलन में भाग लेने आये थे, उनमें प्रमुख थे-ब्रह्मानन्द केशवचन्द्र सेन, बाबू नवीनचन्द्र राय, मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी, मुंशी इन्द्रमणि, हरिश्चन्द्र चिन्तामणि और मुस्लिम जन जागरण के अग्रदूत सैयद अहमद।

स्वामीजी ने उन सबके सामने देश की दुर्दशा का मार्मिक विश्लेषण करते हुए यह प्रस्ताव रखा कि यदि हम सब लोग एकमत हो जाएँ और एक ही रीति से देश का सुधार करें तो आशा है देश में शीघ्र सुधार हो सकता है। आप सब वेदों को ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार लें और आर्य-संस्कृति के मौलिक तत्त्वों को आधार बनाकर देश और समाज के पुनर्निमाण का प्रयत्न करें तो निश्चय ही सफल हो सकते हैं।

लेकिन उनका प्रस्ताव स्वीकृत नहीं हो सका। हो ही नहीं सकता था क्योंकि सम्मेलन में वर्तमान नेताओं के विचारों में सद्भावना के बावजूद बहुत मतभेद था। विशेषकर वेदों को लेकर। इस सम्मेलन का विवरण 'इंडियन मिरर' कलकत्ता के १७ जनवरी, १८७७ के रविवासरीय संस्करण में तथा लाहौर के 'बिरादरे हिन्द', (जनवरी, १८७७) में छपा था। इसकी असफलता का मुख्य कारण क्या था इसकी चर्चा करते हुए आठ वर्ष बाद जनवरी, १८८५ में बाबू नवीनचन्द्र राय ने (ज्ञान प्रदायिनी) पत्रिका में लिखा था:

"फिर दूसरी ओर स्वामीजी की मुलाकात हम लोगों से दिल्ली में सन् १८७७ में 'कैसरे हिन्द' के दरबार में

हुई। वहाँ उन्होंने हमें, बाबू केशवचन्द्र सेन, दक्षिणवासी श.व.गोपालराव हरि देशमुख और श्री हरिश्चन्द्र चिन्तामणि को निमंत्रित किया और हम लोगों से यह प्रस्ताव किया कि हम लोग पृथक् पृथक् रीति से धर्मोपदेश न करके एकता के साथ करें तो अधिक फल होगा। इस विषय में बहुत बातचीत हुई पर मूल विश्वास में हम लोगों का उनके साथ भेद था, इसलिए जैसा वे चाहते थे एकता न हो सकी।"

मूल विश्वास में यह कैसा भेद था जिसकी चर्चा श्री प्रेमसुन्दर बसु ने बाबू केशवचन्द्र सेन की जीवनी में की है (Life of Keshav Chandra Sen, Page 328) :

"बाबू केशवचन्द्र सेन जब फिर दिल्ली में स्वामी दयानन्द से मिले तो उन्होंने कहा कि बहुत-सी बातों में उनसे सहमत हैं, लेकिन एक बात उनकी समझ में नहीं आती कि बिना वेद का सहारा लिए धार्मिक शिक्षा कैसे दी जा सकती है।"

यह एकता न हो सकी परन्तु स्वामी जी के मन में यह प्रश्न बराबर कौंधता रहा कि कैसे हो सकती है यह एकता? कैसे हो सकते हैं हम सब एक? तीन वर्ष बाद वे आगरा पहुँचे। वहाँ सेंट पीटर्स चर्च के विशप ने उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। स्वामीजी १२ दिसम्बर, १८८० को उनसे मिलने गये। बहुत देर तक उनमें बातें होती रहीं। स्वामी जी ने कहा कि यदि हम और आप तथा अन्य धर्मों के बुद्धिमान नेता केवल उन बातों का प्रचार करें जिन्हें सब मानते हैं तो एकता स्थापित हो सकती है और फिर मुकाबले पर नास्तिक ही रह जायेंगे। बिशप ने कहा, यह दुष्कर है। मुसलमान और ईसाई मांस खाना कभी न छोड़ेंगे।

लेकिन अभी हम थोड़ा पीछे लौटें। दिल्ली से मेरठ आदि स्थानों पर होते हुए वे चाँदपुर के धार्मिक मेले में पहुँचे। यहाँ पर मेला प्रारम्भ होने के दिन (१६ मार्च, १८७७) प्रातःकाल ही कुछ लोग स्वामी के पास आये और उनके सामने एक प्रस्ताव रखा कि हिन्दू और मुसलमान धर्माचार्यों को मिलकर ईसाई पादरियों को पराजित करना चाहिए। स्वामी जी ने इसका विरोध किया और कहा कि हमारे यहाँ आने का प्रयोजन सत्यान्वेषण है न कि किसी धर्म या मत को पराजित करने का भाव। उन्होंने बल देकर कहा कि हमें स्वमत के आग्रह को छोड़कर सत्य

(शेष पृष्ठ 3 पर)

विनय पीयूष

सृजन

ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः॥
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी॥
सूर्य्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः॥ (ऋग्वेद 10/190/1,2,3)

सर्वतः प्रकाशमान ईश्वर
के तप से
प्रकटती है प्रकृति
और बनते हैं सृष्टि-नियम।
ईश्वर के तप से ही
होती है प्रलय-रात्रि,
जन्मता है अंतरिक्ष,
संवत्सर मार्तण्ड।
विश्व का वशी रचता
पल-भर में दिवस रात!
धाता विधाता
रच देता है वैसा ही
अंतरिक्ष
वैसे ही सूर्य, चंद्र, पृथवी, द्युलोक आदि
रचता रहा है जैसे
सदा पूर्वकल्पों में!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

आर्य्य लोक वार्ता : पत्र नहीं स्वाध्याय है - एक नया अध्याय है।

सम्पादकीय

मैं आर्यभिक्षु का भक्त हूँ

क्योंकि वे आर्य समाज के भक्त थे। ऐसे भक्त, जिसकी समता खोजने से भी नहीं मिलती है। आर्यभिक्षु जैसे संत के आशीर्वाद से आर्य लोक वार्ता सत्पथ पर चलते हुए २२ वर्षों से बिना एक भी विज्ञापन के प्रकाशित हो रहा है, यह कम गौरव की बात नहीं है। आर्यभिक्षु के आर्य समाज के प्रति अनन्य निष्ठा के चार महत्त्वपूर्ण बिन्दु मेरे मस्तिष्क में कौंध रहे हैं किन्तु यहाँ स्थानाभाव के कारण मैं उनमें से मात्र एक बिन्दु की चर्चा करूँगा-

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश लखनऊ से जब १६५७ के आसपास उनका सम्बन्ध विच्छेद हुआ- तो उन्होंने प्रतिक्रिया स्वरूप आर्य समाज से सम्बन्ध विच्छेद न करके आर्य समाज के प्रचारक उपदेशक प्रवक्ता के रूप में अपनी ख्याति की चन्द्रिका का विस्तार करना शुरू कर दिया। उन्हीं दिनों आर्य समाज ने पंजाब हिन्दी रक्षा सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया। इसमें आर्य समाज की प्रतिष्ठा दांव पर लगी हुई थी और सर्वाधिक आवश्यकता थी ऐसे वीर सत्याग्रहियों की; जो अपना जत्था लेकर सत्याग्रह में भाग लें और पंजाब की जेलों की शोभा बढ़ायें। वाणी की शूरवीर तो बहुत थे किन्तु सत्याग्रह के लिए सन्नद्ध होने वालों की संख्या नगण्य थी। आर्य समाज के नेताओं की अपील पर अपील हो रही थी किन्तु उत्तर प्रदेश में सन्नाटा व्याप्त था। उसी समय इस सन्नाटे को भंग कर पूर्वी उत्तर प्रदेश के आर्यवीरों का एक विशाल जत्था लेकर जो आर्य नेता सामने आया- वह था श्री रामजी प्रसाद गुप्त (आर्यभिक्षु) मुगलसराय। इस जत्थे ने एक जागृति पैदा की और जगह जगह पर इसका भव्य स्वागत हुआ। गुप्तजी ने सत्याग्रह किया और पंजाब सरकार की जेल में उस समय तक रहे, जबतक सत्याग्रह चलता रहा। पंजाब की जेल को उन्होंने आर्य समाज का प्रचार केन्द्र बना दिया। सत्याग्रह की समाप्ति पर आन्दोलन के रहनुमाओं की जो चित्रावली प्रकाशित हुई, उसमें उत्तर प्रदेश से श्री रामजी प्रसाद गुप्त का नाम सर्वोपरि था।

कुछ समय बाद वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर वे रामजी प्रसाद गुप्त से आर्यभिक्षु और फिर महात्मा आर्यभिक्षु बने। उन्होंने उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार के अलावा मुम्बई, कोलकाता, हैदराबाद इत्यादि नगरों में आर्य समाज के मंच से धुआंधार प्रचार किया और तदुपरान्त आर्य जगत के गौरव आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार को सभी आश्रमों में श्रेष्ठ जानकर अपना आश्रय स्थल बनाया जहाँ रहकर जीवन पर्यन्त उन्होंने आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार किया। इस अवधि में उन्होंने किसी अन्य विचारधारा को न अपनाया न आर्य समाज के अतिरिक्त अन्य किसी संस्था का दामन पकड़ा। जीवन की अंतिम साँस तक वे आर्य समाज के होकर रहे। महर्षि दयानन्द के इस निर्देश को उन्होंने गाँठ में बाँध लिया था कि ''यदि देश की उन्नति चाहते हो तो आर्य समाज से मिलकर कार्य करो।'' इस बीच कई उपदेशक या नेता इधर से उधर गये, आये पर आर्यभिक्षु जी अपने लक्ष्य पर अडिग रहे। जीवन के अंतिम क्षणों में भी उन्होंने अपने इस व्रत का पालन किया और काल को अपना पीछा करते देख (२००२) अपने प्रियवर श्री देवराज आर्य को साथ लेकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित विश्व की प्रथम आर्य समाज काकड़वाड़ी मुम्बई गये, वहाँ के तत्कालीन प्रबंधक श्री राजेन्द्र को आर्य समाज के निमित्त पुष्कल धनराशि जो उन्होंने आर्य समाजों में प्रचार करते हुए संग्रह की थी, भेंट की और अस्वस्थता की विषम स्थितियों में वापस आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर में अपनी कुटिया में आ गये और रात्रि के अंतिम प्रहरों में अपने प्राण विसर्जित कर दिये। किस समय कितने बजे उन्होंने प्राण त्याग किया कोई जान नहीं पाया- 'उर्वारुकमिव' की जीवन भर व्याख्या करने वाले इस सन्त ने 'उर्वारुकमिव' ही बंधनों से मुक्ति प्राप्त की। गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में-

'सुमनमाल जिमि कंठ ते गिरत न जानहिं नाग'

आर्य समाज के प्रति आर्यभिक्षु स्वामी आत्मबोध सरस्वती का उत्कट प्रेम 'चातक और स्वातिजल' की भाँति था। गोस्वामी तुलसी दास ने एक दोहे में इस भावना का वर्णन किया है-

बध्यो वधिक पद्यो पुन्य जल उलटि उठाई चोंच।
तुलसी चातक प्रेम पट मरतहुँ लगी न खोंच।।

मृत्यु के समय में भी चातक ने स्वाति जल के अलावा अन्य जल का स्पर्श नहीं किया। आज थोड़े से प्रलोभनों में अपनी आस्थाओं के केन्द्र बदलने वाले आर्य समाज से जीविकोपार्जन करते हुए भी आर्य समाज के नाम से किनारा करने वाले भयाकुल लोगों के लिए आर्यभिक्षु का जीवन एक नसीहत है, उपदेश है, शिक्षा है, निर्देश है, प्रेरणा है। इस सम्बन्ध में कनखल, सर्वप्रिय विहार कालोनी हरिद्वार निवासी श्री चन्द्र प्रकाश शुक्ल द्वारा लिखित एक संस्मरण 'सन्त दर्शन का प्रभाव' बहुत कुछ कहता है। संस्मरण की अंतिम पंक्तियाँ कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें और समझें और स्वकर्तव्य का निर्धारण करें। इन पंक्तियों को पढ़कर आप यह भी निश्चय कर सकेंगे कि आखिर मैं क्यों आर्यभिक्षु जी का भक्त हूँ-

"२८ अगस्त २००२ को जयपुर जाने से पूर्व उन्होंने अपना प्रोग्राम बताया था। मैंने स्वामी जी से निवेदन किया कि मेरे पास गायत्री मंत्र लिखा हुआ एक अंगोछा रखा है, मेरी इच्छा है कि जब आप प्रवचन करें तो इसे डाल लिया करें। स्वामी जी ने उसका रंग पूछा और स्वीकार तो कर लिया पर अगले दिन मुझे उस अंगोछे के साथ एक छोटी तौलिया रखकर वापस करते हुए बोले कि इसपर 'शांतिकुंज' लिखा है अतः यह उचित नहीं है। अब स्वामी जी मुझे बेटा कहकर सम्बोधित करने लगे थे तथा 'कल्याण हो' यह आशीर्वाद मुझे नित्यप्रति मिल जाता था।'' ('आत्मबोध उपदेशामृत', पृ.४५)

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-२०६

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में दशम समुल्लास का अंश

अज्ञो भवति वै बालः पिता भवति मन्त्रदः।
अज्ञं हि बालमित्याहुः पितेत्येव तु मन्त्रदम्॥

क्योंकि चाहै सौ वर्ष का भी हो परन्तु जो विद्यारहित है वह बालक और जो विद्या विज्ञान का दाता है उस बालक को भी वृद्ध मानना चाहिये। क्योंकि सब शास्त्र आप्त विद्वान् अज्ञानी को बालक और ज्ञानी को पिता कहते हैं।।9।।

न हायनैर्न पलितैर्न वित्तेन न बन्धुभिः।
ऋषयश्चक्रिरे धर्मं योऽनूचानः स नो महान्॥

अधिक वर्षों के बीतने, श्वेत बाल के होने, अधिक धन से और बड़े कुटुम्ब के होने से वृद्ध नहीं होता। किन्तु ऋषि महात्माओं का यही निश्चय है कि जो हमारे बीच में विद्या विज्ञान में अधिक है; वही वृद्ध पुरुष कहाता है।।10।।

विप्राणां ज्ञानतो ज्यैष्ठ्यं क्षत्रियाणां तु वीर्यतः।
वैश्यानां धान्यधनतः शूद्राणामेव जन्मतः॥

ब्राह्मण ज्ञान से, क्षत्रिय बल से, वैश्य धनधान्य से और शूद्र जन्म अर्थात् अधिक आयु से वृद्ध होता है।।11।।

न तेन वृद्धो भवति येनास्य पलितं शिरः।
यो वै युवाप्यधीयानस्तं देवाः स्थविरं विदुः॥

शरीर के बाल श्वेत होने से बूढ़्ढा नहीं होता किन्तु जो युवा विद्या पढ़ा हुआ है उसी को विद्वान् लोग बड़ा जानते हैं।।12।।

आचार-अनाचार

यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः।
यश्च विप्रोऽनधीयानस्त्रयस्ते नाम बिभ्रति॥

और जो विद्या नहीं पढ़ा है वह जैसा काष्ठ का हाथी; चमड़े का मृग होता है वैसा अविद्वान् मनुष्य जगत् में नाममात्र मनुष्य कहाता है।।13।।

अहिंसयैव भूतानां कार्यं श्रेयोऽनुशासनम्।
वाक् चैव मधुरा श्लक्ष्णा प्रयोज्या धर्ममिच्छता॥

इसलिए विद्या पढ़, विद्वान् धर्मात्मा होकर निर्वैरता से सब प्राणियों के कल्याण का उपदेश करे। और उपदेश में वाणी मधुर और कोमल बोले। जो सत्योपदेश से धर्म की वृद्धि और अधर्म का नाश करते हैं वे पुरुष धन्य हैं।।14।।

नित्य स्नान, वस्त्र, अन्न, पान, स्थान सब शुद्ध रक्खे क्योंकि इन के शुद्ध होने में चित्त की शुद्धि और आरोग्यता प्राप्त होकर पुरुषार्थ बढ़ता है। शौच उतना करना योग्य है कि जितने से मल दुर्गन्ध दूर हो जाय।

आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त्त एव च।

जो सत्यभाषणादि कर्मों का आचरण करना है वही वेद और स्मृति में कहा हुआ आचार है।।मनु.।।

मा नो वधीः पितरं मोत मातरम्॥
आचार्य्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणमिच्छते॥
मातृदेवो भव। पितृदेवा भव। आचार्य्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव॥

माता, पिता, आचार्य्य और अतिथि की सेवा करना देवपूजा कहाती है। और जिस-जिस कर्म से जगत् का उपकार हो वह-वह कर्म करना और हानिकारक छोड़ देना ही मनुष्य का मुख्य कर्त्तव्य कर्म है। कभी नास्तिक, लम्पट, विश्वासघाती, चोर, मिथ्यावादी, स्वार्थी, कपटी, छली आदि दुष्ट मनुष्यों का संग न करे। आप्त जो सत्यवादी धर्मात्मा परोपकारप्रिय जन हैं उनका सदा संग करने ही का नाम श्रेष्ठाचार है।तैत्तिरी.।।

(क्रमशः)

वेदांजलि

उसके मित्र कभी दुःख नहीं पाते

□पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया। भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव।।

(सामवेद : 66)

शब्दार्थ-

(वयम्) हम उपासक लोग **(इमं स्तोमम्)** इस स्तोत्र के **(अर्हते)** योग्य **(जातवेदसे)** वेद-प्रकाशक परमात्मा को **(मनीषया)** सूक्ष्म-बुद्धि से **(रथमिव)** रथ के समान **(सम्महेमा)** बढ़ावें। **(अस्य)** इस परमात्मा की **(संसदि)** ध्यानशाला में **(नः)** हमारी **(प्रमतिः)** पवित्र बुद्धि **(भद्रा हि)** शुद्ध होती ही है। **(अग्ने)** हे प्रकाशस्वरूप! **(तव)** आपकी **(सख्ये)** अनुकूलता में **(मा)** न **(रिषामा)** दुःखी होवें।

व्याख्या-

मन्त्र में चार बातें कही गईं हैं-(1) हमारी सच्ची स्तुति का पात्र वह प्रभु ही है। (2) अपनी सूक्ष्मबुद्धि से न्याय-नियमों को समझकर इस प्रकार विस्तृत करो जैसे रथ-चालक अभ्यासार्थ घोड़े से चलाए रथ को फिर अपनी बुद्धि से भिन्न-भिन्न मार्गों में चला लेता है। (3) प्रभु की उपासना से हमारी बुद्धि कल्याणी बनती है। (4) जो वास्तव में प्रभु के मित्र बन जाते हैं, वे संसार में कभी दुःखी नहीं हो सकते।

अब क्रमशः एक-एक बात पर विचार करिये।

तुम्हारी स्तुतियों का योग्यपात्र वह प्रभु ही है। रे मनुष्य! तू किसकी प्रशंसा में कविता के पंखों पर उड़कर पृथिवी और आकाश के कुलाबे मिलाता है? किसके यशोगान में लच्छेदार वक्तृताओं और निबन्धमालाओं को प्रस्तुत करता है? उसी मनुष्य को प्रसन्न करने के लिए जो तनिक-से व्यतिक्रम पर तेरे सब किये-कराए पर पानी फेर देता है? थोड़ी थोड़ी सी बात पर जिसके हृदय में प्रतिहिंसा की ज्वाला धधक उठती है? तू स्मरण रख-यह सौदा बहुत महंगा है! तू लाख यत्न करके भी इन्हें प्रसन्न न कर पायेगा। यदि तू वस्तुतः अपनी स्तुति को सार्थक बनाना चाहता है तो उस अनन्त महिमा-मण्डित प्रभु के गुण गा। तल्लीन होकर यदि तू उसकी स्तुति में लग जावे तो उसको प्रसन्न करना इन सांसारिक प्रभुओं से कहीं सरल है।

मंत्र की दूसरी बात है-संसार में प्रभु की न्याय-व्यवस्था को समझो और समझने के पश्चात् उसका विस्तार करो। उसने अपनी असीम कृपा से सृष्टि के प्रारम्भ में ही अपना पवित्र ज्ञान देकर संसार के व्यवहार के नियम बता दिये हैं। किन्तु जब उनके आचरण का, दूसरे शब्दों में परीक्षा का समय आता है, तब वह किसी को कैसे बता सकता है? फिर भी उसकी असीम करुणा है कि बुराई करने के समय मनुष्य के मन में भय, शंका और लज्जा उत्पन्न करके उसे बुराई न करने का संकेत करता है और शुभकर्म के समय हर्ष और उत्साह जगाकर वैसा आचरण करने की प्रेरणा करता है। किन्तु जीव कर्म करने में स्वतंत्र है। इस आधार पर वह अपनी स्वाधीनता से जो भी बुरा अथवा अच्छा कर्म करने का निर्णय करता है, प्रभु उसी आधार पर फल का निश्चय कर देते हैं। स्वयं वेद में कहा है-'**पक्तारं पक्वः पुनराविशाति**'(अथर्व.)-जैसा करो, वैसा भरो!

इसलिए मंत्र में कहा कि उसकी न्याय व्यवस्था को समझो और उसका विस्तार करो तथा उस ज्ञान को संसार का मार्ग दर्शन करते हुए, दूसरे भूले-भटकों तक पहुंचा दो। यही रहस्य दया और न्याय को समझने में है।

मंत्र में तीसरी बात है-उपास्य के गुण उपासक में आने चाहिए। यदि नहीं आते तो कहीं न कहीं त्रुटि अवश्य है। लगता है-वह भक्ति नहीं, ढोंग है।

उपासना का शब्दार्थ है-समीप बैठना। लोक में आप देखते हैं कि पानी के पास बैठनेवाला शीतलता अनुभव करता है और अग्नि के समीप बैठने वाला उष्णता का। यही बात प्रभु की उपासना के लिए भी है। जो भक्त प्रभु को न्यायकारी मानकर उसके न्यायपूर्ण कामों को हृदयंगम करता है, वह दूसरों के साथ न्याययुक्त व्यवहार करे। प्रभु सबका भला चाहते हैं। यदि उपासक सच्चा है तो वह भी सबका भला चाहेगा। संसार की रक्षा के लिए दुष्टों और दुराचारियों की शक्ति क्षीण करने में भी एक भक्त को सदा कटिबद्ध रहना चाहिए।

जब उपासक में उपासना के द्वारा ये दिव्य गुण आने लग जावें तो बुद्धि के कल्याणमय होने में क्या संदेह रह गया? विचार बीज है, तो कार्य उसका अंकुर है। जैसा बीज होगा वैसा ही पौधा होगा, और उसपर फल भी वैसा ही लगेगा। इस स्थिति में साधक पापों को परे धकेल कर भद्रता का भाजन बन जाता है।

मंत्र की चौथी बात है-जो भक्त प्रभु का मित्र बन जाता है, वह संसार में कभी दुःखी नहीं होता। कर्मफल के आधार पर सांसारिक कष्ट आते भी हैं, तो उन्हें वह सहर्ष स्वीकार कर उनका स्वागत करता है। किन्तु प्रभु का सखा बनने के लिए गुणों की समानता अपरिहार्य है। मित्रता के भावों के उद्दीप्त होते ही आप मित्र के मिलने के लिए व्याकुल हो उठेंगे। जब मिलन की भावना तीव्र होगी तो संसार के विषय-सुखों का आकर्षण फीका हो जाएगा। संसार के सब रस नीरस लगेंगे।

('श्रुति सौरभ' से साभार)

दयानन्द चरितामृतम्

-डॉ.गणेश दत्त शर्मा-

(प्रथमः सर्गः)

छन्द ३७-३९

निशम्य वाचं हि पिता सुतस्य च,
उवाच वाच्यं न तु पुत्र ईदृशम्।
असंभवं भो शिवदर्शनं कलौ,
शिवेव तन्मूर्तिरतः प्रयुज्यते।।

पिता (कर्षणजी) पुत्र (मूलशंकर) की बात सुनकर बोले-'हे पुत्र! तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। कलियुग में शिव के दर्शन असंभव हैं अतः शिव की ही भाँति उनकी मूर्ति की पूजा की जाती है।'

तवाभिलाषो यदि दर्शनस्य वै,
कुरुष्व नित्यं शिवमूर्तिपूजनम्।
वसन् हि कैलासगिरौ प्रसादितः,
स दर्शनं दास्यति नित्यपूजया।।

पुत्र! यदि तेरी शिवजी के दर्शन की अभिलाषा है तो तू नित्य ही शिवजी की मूर्ति का पूजन कर। कैलास पर्वत पर निवास करने वाले शिवजी तुम्हारी नित्य पूजा से प्रसन्न होकर तुम्हें दर्शन देंगे।

भृशं पिता प्रेरितवान् सभर्त्सनम्,
तथाप्यसक्तो जडमूर्तिपूजने।
दृढं हि जग्राह सुवेदितुं व्रतम्,
समूलशम्भुं स च मूलशंकरः।।

पिता ने उसे भर्त्सनापूर्वक बहुत प्रेरित किया तथापि जड़ मूर्ति की पूजा में अनासक्त उस मूलशंकर ने शिवजी को मूल रूप में (वास्तविक रूप में) ठीक प्रकार से जानने का दृढ़ व्रत ले लिया।

('दयानन्द चरितामृतम्' से साभार, क्रमशः)

-साहिबाबाद, गाजियाबाद-२०१००५

सत्संग
जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा :

(1) किसी बड़े नेता या महापुरुष के जन्मदिवस पर प्रातः सर्वप्रथम उसकी समाधि पर जाकर फूल चढ़ाये जाते हैं या माथा टेका जाता है! यह कहाँ तक उचित है?

(2) बहराइच जनपद में स्थित गाजी मियाँ की मजार पर मन्नतें मानने वालों में हिन्दू जनता ही अधिक होती है-ऐसा क्यों?

-प्रत्यूष रत्न पाण्डेय, प्रधान, आर्य समाज, लाजपतनगर, चौक, लखनऊ

समाधान :

(1) मरणोपरान्त समाधि बनाना ही अवैदिक है। समाधि तो योग के आठ अंगों- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा और ध्यान के बाद सर्वोच्च आठवीं स्थिति को 'समाधि' कहा गया है। मृत्यु के बाद शरीर की अंतिम स्थिति को 'भस्मान्तं शरीरं' कहा गया है। पुरातन काल में श्रीराम, कृष्ण, हनुमान इत्यादि की समाधियाँ कहीं नहीं हैं। अतः 'समाधि' की स्थापना ही अवैदिक है- फिर उस पर माल्यार्पण इत्यादि भी निरर्थक है। जन्मदिवस पर जन्म स्थल पर जाना चाहिए। जो प्रेरणा जन्मस्थल पर जाने से मिलेगी वह मरण स्थल पर जाकर कभी नहीं मिल सकती है। हमारे देश में जन्मदिवस या जयंती मनाये जाने की परम्परायें हैं किन्तु मृत्युदिवस मनाने की कोई परम्परा नहीं रही है- राम, कृष्ण, राणा, शिवा, तुलसी इत्यादि की जयंतियां ही मनाई जाती हैं। अतः मरणोपरान्त मृत व्यक्ति के दाह स्थल पर या अन्य जगहों पर कोई 'समाधि' नहीं बनाना चाहिए। हाँ, उनकी जयन्ती के अवसर पर जन्म स्थल पर जाकर अवश्य कोई समारोह या आयोजन करना चाहिए; जिससे उसके विचारों की जानकारी जनता को मिल सके। समाधियाँ बनाने से धरती का एक बड़ा भाग अनुपयोगी बना दिया जाता है। वहाँ यदि कृषि कार्य में उस जमीन का प्रयोग हो तो जनता को काफी लाभ मिल सकता है।

(2) हिन्दू जनता में अज्ञान, अंधविश्वास का मूल कारण उसका वेदज्ञान से वंचित होना है। जहाँ तक बहराइच की मजार की बात है- गोस्वामी तुलसी दास को जब इस बात की जानकारी मिली तो उन्हें भी इसका मलाल था! गोस्वामी जी ने एक दोहे में अपनी विचारधारा के माध्यम से हिन्दू जनता को आगाह भी किया किन्तु खेद है कि हिन्दू समाज गोस्वामी जी की वाणी की भी उपेक्षा करने से बाज नहीं आया। गोस्वामी जी का दोहा निम्नांकित है, सभी को यह दोहा याद कर लेना चाहिए और अधिकाधिक इसका प्रचार करना चाहिए कि जब अंधविश्वास दूर होगा, ज्ञान का प्रसार होगा तभी इस तरह की बातें खत्म होंगी-

लही आँख कब आँधरे, बाँझ पूत कब जाय।
कब कोढ़ी काया मही, जग बहराइच जाय।।

-सम्पादक

(पृष्ठ 1 का शेष.....)

दयानन्द से डरने .....

जिज्ञासा के भाव से ही विचार में प्रवृत्त होना चाहिए।

इस मेले में निर्धारित विषयों पर ठीक प्रकार से विचार नहीं हो सका। यहाँ से वे शाहजहाँपुर और सहारनपुर होते हुए लुधियाना चले गये। पाँच नदियों का यह प्रदेश बहुत दिनों से उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। हरिद्वार, काशी, कलकत्ता और बम्बई के बाद लाहौर उनकी सत्य की खोज की यात्रा का एक और दिशासूचक केन्द्र है। विशेषकर दो बातों के लिए यह प्रवास चिरस्मरणीय बन गया है। एक तो यह है कि १४ जून, १८७७ को लाहौर में जब आर्य समाज की स्थापना हुई तब बम्बई आर्य समाज के २८ नियम, १० नियमों में सीमित हो गये। दूसरी बात यह है कि अपने वेदभाष्य के लिए उन्होंने सरकार से प्रार्थना की।

लुधियाना में स्वामीजी मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी के साथ रहे। वहाँ से १६ अप्रैल, १८७७ को लाहौर पहुँचे। दिल्ली दरबार के समय उन्हें वहाँ आने का निमंत्रण मिल चुका था। उन्हें निमंत्रित करनेवालों में अधिकतर व्यक्ति ब्रह्म समाज से जुड़े हुए थे। वे यहाँ दीवान रतनचन्द दाढ़ीवाले के बाग में ठहरे। उनके व्याख्यानों ने नगर में उत्सुकता और बेचैनी पैदा कर दी। लेकिन सनातन ध र्म के अनुयायी क्रुद्ध हो उठे इतने कि उन्होंने दीवान साहब के बेटे से स्वामी जी को बाग से निकाल देने का आग्रह किया।

और अन्ततः स्वामी जी को वह बाग छोड़ना पड़ा। इस बार उनके भक्तों ने उनके रहने की व्यवस्था डॉ. रहीम खाँ की कोठी में की। उनके भक्तों की संख्या निरन्तर बढ़ रही थी। उपरोक्त महानुभावों के अतिरिक्त सरदार विक्रम सिंह अहलूवालिया, भक्त लक्ष्मण सिंह, खानबहादुर रहीम खाँ, मियाँ जान मोहम्मद, लाला मूलराज, लाला साहूदास, लाला श्रीराम, लाला जीवानन्द, श्री शारदाप्रसाद भट्टाचार्य, डॉ.खजानचन्द और डॉ.सदानन्द आदि उनके प्रशंसक बन गये थे। और जब आर्य समाज की स्थापना हुई तो इन्हीं में से अधिकांश व्यक्ति उसके पहले सदस्य बने।

लाहौर आर्य समाज की स्थापना दो और तथ्यों को उजागर करती है। एक यह कि उसकी स्थापना किसी हिन्दू के घर पर नहीं बल्कि एक मुसलमान सज्जन (डॉ.रहीम खाँ) की कोठी पर हुई। दूसरा यह कि उस समय जिस उपासना पद्धति का प्रयोग किया गया वह ब्रह्म समाज की थी। तब तक आर्य समाज की अपनी कोई पद्धति विकसित नहीं हुई थी। पहले अधिवेशन में स्वामी जी के अतिरिक्त बाबू शारदाप्रसाद भट्टाचार्य का भी प्रवचन हुआ। ये साधारण बातें हो सकती हैं पर इनके अर्थ बहुत गहरे हैं। स्वामी जी जितने उदार और लोकप्रिय थे, डॉ.रहीम खाँ की उदारता भी उतनी ही प्रशंसनीय है। १ जुलाई, १८७७ के 'बिरादरे हिन्द' ने लिखा थाः

''यद्यपि उन्होंने संस्कृत साहित्य के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा का साहित्य नहीं पढ़ा है तथापि उन्होंने अपने विचारों को इतना परिमार्जित और विकसित कर लिया है कि वे अंग्रेजी शिक्षा पाये हुए लोगों के विचारों से भी उत्तम विचार रखते हैं। वे केवल धार्मिक सुधार पर ही नहीं वरन् बाल-विवाह आदि सब बुराइयों के सुधार पर भी उनकी दृष्टि है। स्त्रियों की स्वतंत्रता और शिक्षा के वे विशेष इच्छुक हैं। अविद्या, हठ, दुराग्रह को दूर करना, विद्या का प्रचार करना, जाति में एकता उत्पन्न करना-इनका अंतिम ध्येय है।''

आर्य समाज के दस नियमों में एक नियम यह भी है कि 'सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।' सबकी उन्नति की दृष्टि से ही उन्होंने वेदों को विद्वानों की पंचायत से निकाल कर जनता के बीच प्रतिष्ठित करना चाहा था। यह तभी हो सकता था जब उसका संस्कृत के साथ लोक प्रचलित भाषा अर्थात् हिन्दी में प्रमाणिक अनुवाद उपलब्ध हो। यही वे कर रहे थे। और द्रुत गति से कर रहे थे। करते-करते उनको ऐसा लगा कि यदि पंजाब सरकार इस काम में कुछ आर्थिक सहायता कर सके तो यह साहित्यिक अनुष्ठान बिना किसी विशेष बाधा के सम्पन्न हो सकेगा। इसके लि १४ मई, १८७७ को गवर्नर से मिले। अपने वेदभाष्य के दो अंक उन्हें भेजे। लेकिन अन्ततः उनकी प्रार्थना अस्वीकृत हो गयी। इस अस्वीकृति का मुख्य कारण था कि जिन विद्वानों के पास उनका भाष्य सम्मति के लिए भेजा गया उन्होंने उसे प्रामाणिक नहीं माना।

जब स्वामी जी को इन आपत्तियों का ज्ञान हुआ तो उन्होंने विस्तृत समीक्षा करते हुए स्वरचित वेदभाष्य के वैशिष्ट्य का प्रतिपादन किया परन्तु सरकार का निश्चय अडिग रहा। प्रतिकूल सम्मति देने वाले विद्वानों में सर्वश्री ग्रिफिथ और टानी जैसे विदेशी विद्वान भी थे। परन्तु इसके विपरीत श्री अरविन्द ने लिखा था--

'वेदों के भाष्य के विषय में मेरा पूर्ण विश्वास है कि अन्त में चाहे जो भाष्य प्रमाणित माना जाए लेकिन स्वामी दयानन्द की प्रतिष्ठा सबसे बढ़कर की जाएगी। क्योंकि उन्होंने सत्य के अर्थों को खोज निकाला अर्थात् धातु का अर्थ यौगिक शब्दों में निकालना उन्हीं का काम था।'

परन्तु स्वामी जी का कार्य सरकारी सहायता के अभाव में रुका नहीं क्योंकि इसके प्रकाशन से पूर्व ही एक हजार से अधिक व्यक्ति अग्रिम शुल्क भेजकर ग्राहक बन चुके थे।

सोलह महीने तक वे पंजाब में घूम घूम कर तमस के विरुद्ध संघर्ष करते रहे। अमृतसर, गुरुदासपुर-जालन्धर, फीरोजपुर, रावलपिंडी, जेहलम, गुजरात, वजीराबाद मुलतान आदि स्थानों पर उनके व्याख्यान की धूम मच गयी। सबसे अधिक सफलता उन्हें इसी प्रान्त में मिली।

इस प्रवास में अमृतसर में रहते हुए स्वामी जी ने 'आर्योद्देश्य रत्नमाला' की रचना की। इसमें वैदिक सिद्धान्तों की सरल परिभाषाएँ दी गयी हैं। व्याख्यानों और शास्त्रार्थों के बीच वे साहित्य-रचना करना नहीं भूलते थे।

(भारतीय साहित्य के निर्माता : स्वामी दयानन्द सरस्वती' - से सम्पादित अंश)

व्यक्ति-विशेष

बहुमुखी प्रतिभा का अजेय शिलालेख

अमृत खरे

-**उमेश राही**, नवीं, मुम्बई

सन् १९८० में मैं शाहजहाँपुर से स्थानांतरित होकर बाराबंकी आया। उस समय मैं बाल सुधार गृह के अधीक्षक पद पर था। छाया टाकीज के पास में कार्यालय और आवास था। श्री अमृत खरे की पोस्टिंग उस समय गोंडा में थी, वह रविवार को बाराबंकी आते थे। उन दिनों वह बाराबंकी से 'क्षेपक' पत्रिका का प्रकाशन और संपादन कर रहे थे। एक साहित्यिक समारोह में मेरी उनसे भेंट हुई। उनके गीत सुनकर मैं पहली बार में ही उनके लाजवाब गीतों का दीवाना हो गया। श्री खरे और क्षेपक के उनके सहयोगी श्री कृष्णकांत मिश्र का मेरे घर आना जाना शुरू हो गया। उस समय मुझ पर भी कवि सम्मेलन का जुनून सवार था, अतः मैंने अमृत खरे के साथ कई कवि सम्मेलनों में एक साथ मंच साझा किया। युवा अमृत खरे का गीतशिल्प, उपमान, रूपक सभी इतने प्रभावशाली थे कि सभी मंचों पर उनको सराहा जाता। जब भी वह बाराबंकी आते मेरे आवास पर आते और घंटों हमलोग एक दूसरे को सुनते। उनके प्रणय गीतों में अनछुई और अनकही उपमाओं का प्रयोग मुझे इतना आकर्षक लगा, कि जब मेरा पहला काव्यसंग्रह 'अर्चना के फूल' प्रकाशन की योजना बनी तो मैंने पांडुलिपि अमृत जी को देकर कहा इसको देखकर दुरुस्त भी कर दें। अमृत खरे एक छोटे भाई की तरह मेरे दिल में स्थान बना चुके थे, जो आज भी है। वहाँ रहकर मैंने राष्ट्रभाषा रक्षा समिति का गठन किया जिसके अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय के हिन्दी के प्रोफेसर डॉ.वेद प्रकाश आर्य बनाये गये। श्री खरे भी उस समिति में सक्रिय सदस्य रहे। क्षेपक के संपादक के रूप में उनकी गजब की प्रतिभा और लेखनशैली देखने को मिलीी। मेरी कई रचनाएँ और साक्षात्कार क्षेपक में उन्होंने छापे। कालांतर में मेरा भी तबादला प्रोन्नति पाकर दूसरे पद पद बांदा हो गया और अमृत जी की भी पोस्टिंग लखनऊ हो गई। जब मैं लखनऊ आता तब अमृत जी से जरूर मिलता। वे मेरे घर के सदस्य के रूप में हो गये थे। मुझे याद है जब लखनऊ दूरदर्शन के सरस्वती कार्यक्रम में अमृत जी को बुलाया गया तो सबसे पहले उन्होंने मुझको बताया। जब लखनऊ से प्रोफेसर आर्य जी ने आर्य लोक वार्ता का प्रकाशन शुरू किया तो शुरू से ही अमृत जी सहयोगी रहे। फिर शायद भारत में पहली बार किसी कवि ने वेदमंत्रों का हिन्दी में काव्यात्मक अनुवाद का बीड़ा उठाया। आर्य लोक वार्ता का एक स्तम्भ बन गया, आज भी प्रत्येक अंक में अमृत खरे का वेदमंत्र का एक काव्यानुवाद अनवरत प्रकाशित होता है। इतना मुश्किल काम वह कैसे कर लेते हैं यह ईश्वर ही जानता है। जहाँ तक मैं जानता हूँ श्री खरे विज्ञान के विद्यार्थी रहे हैं, फिर भी संस्कृत का इतना ज्ञान और अनुवाद की क्षमता एक विलक्षण प्रतिभा की पुष्टि है। अब एक नये रूप में अमृत जी अवतरित हुए हैं, वह है संगीतकार और वाद्ययंत्र के साथ गायन। अमृत फिल्म्स नाम से उनका यू ट्यूब चैनल है। कवि, अनुवादक, संगीतकार, गायक आदि कई रूप में वह स्थापित हो चुके हैं। साहित्य के क्षेत्र में वह अजेय शिलालेख हैं, जिनपर विभिन्न रंगों और रूपों का कलेवर है।

शुभाकांक्षा

'आर्य लोक वार्ता' (फरवरी '२१)

देखकर स्पष्ट हुआ कि मीडिया विशेषज्ञ श्री संजय माथुर द्वारा किये गए मेरे साक्षात्कार ने विगत २३ वर्षों से प्रकाशित हो रहे 'विनय पीयूष' की ग्राह्यता तथा स्वीकार्यता में प्राण फूँक दिए हैं। वरिष्ठ कवि डॉ.उमा शंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ' और दयानन्द जड़िया 'अबोध' तथा वरिष्ठ कवयित्री सुश्री रामा आर्य 'रमा' की शुभाकांक्षाएँ मेरे लिए बहुत अर्थ रखती हैं। मैं धन्य हूँ कि आर्य समाज के शीर्ष नेता तथा विचारक स्वनामधन्य श्री आनन्द कुमार आर्य जी की कृपादृष्टि भी मेरे कृतित्व पर पड़ी है। मैं सभी के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ। हाँ, 'आर्य लोक वार्ता' और आदरणीय डॉ.वेद प्रकाश आर्य के उल्लेख के बिना यह कहानी अधूरी ही रहेगी, इसलिए इनके लिए हार्दिक धन्यवाद और आभार तो बनता ही है। *-अमृत खरे*

2/90, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-10

***

'आर्य लोक वार्ता' जनवरी अंक साभार

मिला। प्रसन्नता का विषय है कि कोरोना काल में लगभग दस मास प्रकाशन अवरुद्ध होने के पश्चात इस अंक से पुनः प्रकाशन प्रारंभ हो गया है। दूसरा हर्षदायक बिंदु यह है कि पत्र के गौरवशाली प्रकाशन के २३वें वर्ष का शुभारंभ हुआ है। एतदर्थ आपको भूरिशः बधाई। पत्र में आमुख प्रस्तुति के अन्तर्गत वरिष्ठ कवि अमृत खरे द्वारा वेदमंत्रों के काव्यानुवाद की २३वर्षीय साधना यात्रा का साक्षात्कार रूप में वृत्तांत प्रदान करके अत्यंत श्लाघनीय आयोजन किया गया है। पाठकों को इससे प्रेरणा और मार्गदर्शन प्राप्त होगा। भाई अमृत खरे जी मंचों से दूर सात्विक काव्य सृजन में रत रहते हैं। वे अपने काव्य सौष्ठव, वैदिक ज्ञान, प्रेरक व्यक्तित्व एवं सौम्य स्वभाव से सभी को सहज ही अपना अभिन्न बना लेते हैं। मुझे गर्व है कि मुझे उनका स्नेहिल सान्निध्य सतत मिलता रहा है। 'विनय पीयूष' स्तंभ में उनका विद्वत्तापूर्ण सृजन नियमित रूप से प्रकाशित हो रहा है। वैदिक मंत्रों का गूढ़ भाव और सूक्ष्म चिंतन आत्मसात करना अत्यंत दुरूह है। उनका सरस काव्यानुवाद अंतर्मन को आलोकित कर देता है। सम्पादकीय में उत्तर रामचरितमानस और श्रीराम की जानकारी दी गई है जो सर्वथा अनुमन्य लगी। 'काव्यायन' में पूर्वज कवियों जयशंकर प्रसाद तथा जगन्नाथ दास रत्नाकर की कालजयी रचनाओं के साथ ब्रजेश, दयानन्द जड़िया 'अबोध', 'शितिकण्ठ', बाँकेबिहारी 'हर्ष' तथा 'रमा' जी की कविताएँ भी मनमोहक हैं। अन्य विषय वस्तु भी प्रेरक और पठनीय है। आपकी सारस्वत साधना के प्रति श्रद्धावनत हूँ।

आर्य लोक वार्ता को, लगा तेइसवाँ वर्ष।
अर्पित है शुभकामना, उर में छाया हर्ष।।

-गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र'

117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ-22

***

'आर्य लोक वार्ता' का जनवरी २०२१ अंक प्राप्त हुआ। वर्षों से पत्र में वेदमंत्रों का हिन्दी अनुवाद कर आर्य लोक वार्ता का एक स्थायी स्तंभ बन चुके श्री अमृत खरे से श्री संजय माथुर के साक्षात्कार को मुखपृष्ठ पर प्रकाशित किया गया है,

जो अत्यंत प्रभावशाली है। वेदमंत्रों का हिन्दी अनुवाद बहुत मुश्किल काम है जो श्री खरे जी कर रहे हैं। साक्षात्कार में बताया कि अब तक २०० से अधिक वेदमंत्रों का अनुवाद श्री खरे जी ने किया। इसके लिए निश्चित ही वह बधाई के पात्र हैं। श्री संजय माथुर का भी साधुवाद जिन्होंने विस्तार से वार्ता कर पाठकों को पठनीय सामग्री दी। इस अंक में भी 'आचरण के चरण' नाम से वे अनुवाद प्रकाशित है, जो सराहनीय है। आर्य मनीषियों के अवतरण को भी स्थान दिया गया है। सभी कवियों की कविताएँ सराहनीय हैं। विशेषकर श्री शितिकण्ठ और रमा जी की कविताएं स्तुत्य हैं। सम्पादकीय हमेशा की तरह श्लाघनीय है।

-उमेश राही

नवीं, मुम्बई

***

'आर्य लोक वार्ता' का फरवरी २०२१

अंक प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ का लेख 'मानस में कोरोना संत तुलसीदास के मन्तव्य से खिलवाड़' भ्रम फैलाने की जगह बचाव के प्रयास जरूरी, लेख अच्छा है जिसका समाधान अथर्ववेद के मंत्रों से किया गया है। 'वीरजी' की स्मृति में लिखा गया सम्पादकीय एक आत्मस्नेही की पावन स्मृति एवं सच्ची श्रद्धांजलि है। 'अक्षर लोक' में श्री अमृत खरे द्वारा तीन पुस्तकों की समीक्षाएँ ज्ञानवर्द्धक हैं अच्छी हैं। खरे जी बड़े ही लगनशील और कर्मठ साहित्यकार हैं जो हर अंक में 'विनय पीयूष' शीर्षक से वेदमंत्र का काव्यार्थ प्रस्तुत करते रहते हैं। समाचारों में कुछ समाचार अतीव दुखदायी हैं जैसे रमन पाण्डेय, वी.एन.टण्डन व श्री लालजी शुक्ल आदि के निधन और महेश प्रसाद 'महेश' का गायब होना, महेश पाण्डेय का तो पहले ही मालूम हो गया था परन्तु समाचार पढ़कर याद ताजा हो गई, वह बहुत ही सरल-स्वभाव, मिलन सार व अच्छे छन्दकार थे। गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' को पुरस्कार सम्मान मिलने की बधाई मैं पूर्व में ही दे चुका हूँ, पुनः मेरी बधाई व शुभकामना। 'काव्यायन' में उनकी रचना 'भारत महान' अच्छी है। नीरज जी की कालजयी रचना 'दुश्मन को अपना हृदय देकर देखो' अच्छी है। साथ ही श्रीमती रमा आर्य 'रमा', राघवेन्द्र शर्मा त्रिपाठी 'ब्रजेश', बाँके बिहारी 'हर्ष' व बलवीर सिंह 'रंग' इत्यादि की रचनाएँ अच्छी व भावपूर्ण हैं। इस बार अन्तिम पृष्ठ पर वर्षभर के पर्वों की तालिका प्रकाशित कर इस पृष्ठ को वर्ष पर्यन्त सुरक्षित रखने का निर्देश सम्पादक जी ने पाठकों को दिया है। अन्य स्तम्भ भी पठनीय हैं, सुन्दर व ज्ञानवर्द्धक अंक हेतु सम्पादक जी को कोटिशः साधुवाद।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'

370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ-3

***

फरवरी अंक पढ़कर चित्त आह्लादित हो उठा। जितनी सुंदर छपाई; उतने दिव्य विचार और मौलिक चिन्तन। सम्पादक मण्डल को शतशः बधाई, शुभकामना। स्वामी आत्मबोध जी का चित्र देखकर बड़े संतोष का अनुभव हुआ। उनके दर्शन ही नहीं मैंने किये थे, वरन् उनके साथ कई कार्यक्रमों में रहा।

वे निरन्तर मुझे प्रोत्साहित करते थे और ऋषि महिमा के गीत गाने का आदेश देते रहते थे।

मेरी इस शुभाकांक्षा का मुख्य विषय आनन्द बाबू का वह पत्र है, जो उन्होंने वेदमंत्रों के काव्यानुवादक श्री अमृत खरे जी को लिखा है। क्या सुंदर और कल्याण कारी सोच है, आनन्द बाबू की। आज के युग में इतना सुन्दर विचार रखने वाला अन्य कोई आर्य जगत में नजर नहीं आता है। आशा है, जो नया आकाश आनन्द बाबू ने प्रदर्शित किया है, उसमें सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र इत्यादि भी जल्दी ही नजर आयेंगे अर्थात् काव्यानुवाद का भव्य प्रकाशन सम्भव होगा, मेरी शुभकामनाएँ- अमृत जी के लिए। दूसरा मेरी इस शुभाकांक्षा का विषय है-डॉ. वेद प्रकाश आर्य का मुखपृष्ठ पर प्रकाशित लेख, जो अनेक प्रकार के रोचक, शिक्षा प्रद और व्यंजनापूर्ण प्रसंगों से भरा हुआ है। मानस के पृष्ठों में बाल खोजने जैसी खबरें आये दिन उछाली जाती हैं, कदाचित् कुछ लोगों को ऐसी ही बातों में मजा आता है। सम्पादक ने बड़ी योग्यता के साथ ऐसी प्रवृत्तियों से बचने का परामर्श दिया है।

-सत्य प्रकाश आर्य

आवास विकास कालोनी, बाराबंकी, उ.प्र.

***

'आर्य्य लोक वार्ता' का जनवरी '२१

का अंक बहुत समय-माह के उपरान्त प्राप्त हुआ। मुख्य पृष्ठ पर श्री संजय माथुर का कविवर अमृत खरे से जो वैदिक मंत्रों के काव्यानुवाद से सम्बन्धित संवाद प्रकाशित हुआ है, उसे मैंने ध्यान पूर्वक पढ़ा। एक वर्ष पूर्व जनवरी २०२० के अंक में प्रकाशित 'उर्वशी' की लौकिक कथाओं के श्री अमृत खरे के मूलमंत्रों का सरस अनुवाद 'पुरुरवा-उर्वशी' संवाद पुनः पढ़ा। श्री खरे जी की छोटी कहानी 'यह कैसा समाधान' (शार्ट फिल्म) को भी उनके यू-ट्यूब चैनल 'अमृत फिल्मस' पर हमारे पारिवारिक सदस्यों ने खूब देखा। मैं श्री खरे जी को पुनः धन्यवाद देता हूँ। जनवरी २०२१ अंक का सम्पादकीय, 'आर्य संस्कृति के मूल तत्व' व 'शंकर और दयानन्द' धारावाहिक भी बहुत ज्ञानवर्द्धक है। 'काव्यायन' में प्रख्यात कवयित्री श्रीमती रामा आर्य 'रमा' की रचना 'परिचय' पढ़कर आनन्द की अनुभूति हुई। डॉ. आर्य ने अपनी बहन 'रमा' जी की सद्यःप्रकाशित पुस्तक 'मन आंगन आकाश पराया' मुझे दी थी, उसे भी पढ़ा। 'रमा' जी को साधुवाद। इसी अंक के पृ.७ पर प्रकाशित सीतापुर समाचार के अन्तर्गत श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी' के निधन का समाचार पढ़कर मन व्यथित हो गया। एक जुझारू जनप्रिय आर्यनेता के निधन से रिक्तता हो गई। बाराबंकी समाचार के अन्तर्गत वैदिक प्रवक्ता, विद्वान आचार्य शिक्षक श्री सत्यप्रकाश आर्य के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई। मैं उन्हें २२-२३ वर्षों से जानता हूँ तथा उनके भजनोपदेश को सुनता रहा हूँ। वेद प्रचार में उनका विशेष योगदान है।

-पाल प्रवीण

एम.एस.120, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

अक्षर लोक

-अमृत खरे

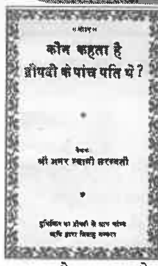

कौन कहता है द्रौपदी के पांच पति थे? (शोध)

शोधकर्त्ता	:	अमर स्वामी सरस्वती
प्रस्तुति	:	पेपर बैक/पृष्ठ संख्या १००
मूल्य	:	आठ रुपये(आठवां संस्करण १९९३)
प्रकाशक	:	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली—२

'कौन कहता है कि द्रौपदी के पांच पति थे?' प्रस्तुत पुस्तक में सारे 'महाभारत' को छान कर यह विचार किया गया है कि क्या वास्तव में द्रौपदी के पांच पति थे?

अमर स्वामी सरस्वती जी 'प्रस्तावना' में लिखते हैं कि वेदादि सत्य शास्त्रों में सर्वत्र एक पति की एक पत्नी और एक पत्नी का एक पति हो, ऐसा ही विधान है। पुरुषों ने कभी-कभी इस विधान के विपरीत एक से अधिक पत्नियां बनाई हैं, पर एक स्त्री के अनेक पति हों, ऐसी प्रथा प्राचीन काल में कभी नहीं चली। कौरवों और पांडवों के वंश में भी यह प्रथा कभी नहीं चली। इस पुस्तक में अनेक बातों पर प्रबल युक्ति संगत प्रमाणों के साथ विचार किया गया है कि--(१) द्रौपदी को क्या बिना विवाह के ही महाराज द्रुपद ने पाण्डवों के साथ भेज दिया होगा। जबकि द्रुपद को यह भी पता नहीं था कि ये लोग कौन हैं! (२) क्या कुन्ती ने ऐसा कहा होगा कि तुम पांचों उसे खा लो। (३) क्या भूल, भ्रम और अज्ञान में माता के मुँह से जो भी वाक्य निकल जाये, चाहे वह अनुचित ही हो, उसका पूरा करना पुत्रों का कर्त्तव्य है? (४) क्या पाण्डवों ने कुन्ती के वाक्य को उसी अर्थ में पूरा किया- जिस अर्थ में कुन्ती के मुख से निकला था? आदि आदि।

सारी बातों पर गम्भीरता पूर्वक विचार के पश्चात् इस पुस्तक में यह पुष्ट प्रमाणों द्वारा यह सिद्ध किया गया है कि द्रौपदी का पति एक ही था और वह अर्जुन नहीं, युधिष्ठिर था।

विदेशी विद्वानों का संस्कृत प्रेम

लेखक	:	जगदीश प्रसाद बरनवाल 'कुन्द'
प्रस्तुति	:	हार्ड बाउण्ड/पृष्ठ संख्या: २५६
मूल्य	:	रु. ५०० $18 और £10
प्रकाशक	:	मेधा बुक्स, एक्स—११, नवीन शाहदरा, दिल्ली—११० ०३२

'विदेशी विद्वानों का संस्कृत प्रेम' ग्रन्थ में भारतीयेतर संस्कृत विद्वानों पर, जिनके श्रमसाध्य प्रयासों से संस्कृत भाषा एवं साहित्य की वैश्विक पहचान बनी, लेखक 'कुन्द' के २५ सार्थक लेख जन्मतिथि क्रम से संग्रहीत हैं। अन्य लगभग चार सौ विद्वानों पर, जिनके बारे में उन्हें अपेक्षाकृत कम जानकारी मिल सकी, अकार क्रम से महत्त्वपूर्ण टिप्पणियाँ दी गयी हैं। विदेशी संस्कृत विद्वान जिन पर सम्पूर्ण लेख प्रस्तुत किए गये हैं वे हैं- अलबरूनी, सर विलिय जोंस, गेरासिम लेबेदेव, चार्ल्स विलकिंस, हेनरी थामस कोलब्रुक, होरेस होमन विल्सन, रॉबर्ट लेन्ज, जेम्स रॉबर्ट वैलेंटाइन, पेत्रोव, बोटालिंग, काएतान कोसोविच, मोनियर विलियम्स, थ्योडोर गोल्डस्डकर, मैक्समूलर, जे.जी.बूलर, इवान मिनायेव, कीलहार्न, पाल डायसन, आर्थर वेनिस, हर्मन जी जैकोबी, डॉ.बी.जी.थीबो, ए.ए.मैकडानल, एस.ओल्डेनबर्ग, एम.विण्टरनित्ज, फ्योदोर श्चेरबात्स्की, ए.बी.कीथ एवं ए.एल.वाशय।

पुस्तक के अन्त में अन्य संस्कृत विद्वानों के योगदान पर एक विहंगम दृष्टि भी डाली गयी है और सत्ताइस संस्कृत विद्वानों के श्वेत-श्याम चित्र भी प्रकाशित किये गये हैं।

सर गंगानाथ झा, केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, प्रयाग के प्रोफेसर (से.नि.)महामहोपाध्याय पं.शिव कुमार मिश्र के शब्दों में, 'संस्कृत के अधिकृत अध्ययन से जुड़े न रहकर भी 'कुन्द' जी द्वारा व्यक्तिगत प्रयास से किया गया यह कार्य निस्सन्देह उन्हें अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर एक स्थान बनायेगा।

ऋतम्भरा (दोहा—संग्रह)

दोहाकार	:	दयानन्द जड़िया 'अबोध'
प्रस्तुति	:	पेपर बैक/पृष्ठ संख्या १००
मूल्य	:	एक सौ पचास रुपये
प्रकाशक	:	त्रिमूर्ति प्रकाशन लखनऊ

'ऋतम्भरा' वरिष्ठ कवि दयानन्द जड़िया 'अबोध' के दोहों का संग्रह है। छान्दसिक कविता को समर्पित 'अबोध' जी की यह छियालीसवीं कृति है।

'ऋतम्भरा' में 'निवेदन-निकुंज', 'प्रकृति प्रभा', 'सत्य-सिन्धु', 'श्रृंगार-सदन', 'रंग-तरंग', 'नीति-निर्झरणी', 'साहित्य-सरोवर', 'विविधांचल', 'अवधी दोहोद्यान' और 'अवधी दोहे' शीर्षकों के अन्तर्गत संयोजित 'अबोध' जी के 'सुबोध' ४५५ दोहे प्रकाशित किये गये हैं। 'परिशिष्ट' में 'अबोध' जी के ग्रन्थों पर अनेक कवियों की स्नेहसिक्त काव्यात्मक टिप्पणियाँ और 'रचनाकार का परिचय' (शिखा जड़िया 'रजनी' के शब्दों में) दृष्टव्य हैं।

वर्तमान समय में वृद्धावस्था एवं रोगग्रस्तता में भी 'अबोध' जी साहित्य साधना में रत हैं। वह सचमुच बधाई के पात्र हैं।

'आर्य लोक वार्ता' अंक फरवरी २०२१ में मुखपृष्ठ पर प्रकाशित प्रधान सम्पादक

डॉ.वेद प्रकाश आर्य का लेख आँखें खोलने वाला है। यह लेख प्रेरणा देता है कि मनुष्य को अफवाहों, अंधविश्वासों से ऊपर उठकर आपदाओं का सामना करने के लिए उचित उपाय करने चाहिए। इस संबन्ध में वेदों का स्वाध्याय विशेष उपयोगी है। 'प्रभु के सहज कर्म' शीर्षक श्री अमृत खरे का काव्यानुवाद जो 'विनय पीयूष' स्तम्भ में प्रकाशित है- हृदय को छूने वाला और प्रभावी है। महात्मा आर्यभिक्षु का चित्र-डॉ.सुधाकर द्विवेदी के संस्कृत श्लोक तथा वैदिक तिथि पत्रक तो 'आर्य लोक वार्ता' की सूझबूझ तथा मौलिकता के जीते जागते उदाहरण हैं।

-प्रेमचंद शर्मा, 15, बहादुर पुर, लखनऊ

***

धारावाहिक-16 कालजयी रचना

आर्य-संस्कृति के मूल तत्त्व

-डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार-

क्या विज्ञान कार्य-कारण के नियम को छोड़ सकता है? जो विज्ञान अभाव से भाव का उत्पन्न होना, और भाव का अभाव में चला जाना नहीं मानता, वह चेतना के इस जन्म में एकाएक, अकारण उत्पन्न होने, और एकाएक समाप्त हो जाने को कैसे मान सकता है? परन्तु क्या पूर्वजन्म और पुनर्जन्म को न मानना चेतना का अकारण उत्पन्न होना और अकारण नष्ट हो जाना नहीं है? विज्ञान, जिसका आधार ही कार्य-कारण का नियम है, विज्ञान कहाता हुआ कर्म के उस सिद्धान्त से कैसे इन्कार कर सकता है, जो अगर कुछ है तो कार्य-कारण का ही नियम है, और कुछ नहीं है। यह कैसे हो सकता है कि 'चेतना'-जैसी एक महान्, अद्वितीय, विलक्षण सत्ता उत्पन्न हो जाय, और उसका पीछे कोई निशान तक न हो, यह 'चेतना' इस जीवन में कुछ देर तक अपनी झलक दिखाकर एकाएक आँखों से ओझल हो जाय, और आगे उसका अता-पता न हो? यहीं होना और यहीं समाप्त हो जाना असंभव है, तभी संभव है जगर कार्य-कारण का नियम न हो। इसके अतिरिक्त इस विचार में भी 'स्वतंत्रता' कहाँ है? 'वंशपरंपरा' और 'परिस्थिति' ही तो हमें बनाती है। इस विचार में, अवैज्ञानिक तौर से कार्य-कारण नियम को तिलांजलि देकर, यह माना जाता है कि पिछले जन्म के कर्म नहीं हैं, कर्म इस जन्म के आगे भी नहीं हैं। इस जन्म में वंश-परम्परा के--माता-पिता के ही नहीं, पितामह, प्रपितामह और पिछली सभी पीढ़ियों के संस्कारों में बंधकर पैदा होना, और इस जन्म में भी परिस्थितियों का ही दास बने रहना, परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाने के स्थान में परिस्थिति के थपेड़े खाकर जैसा वह बनाये वैसा बन जाना--इस विचार में तो यह माना जा सकता है। इसमें आत्मा की स्वतंत्रता कहां रही, पुरुषार्थ कहां रहा? अगर पिछले जन्म के 'कर्म' इस जन्म के कारण नहीं हैं, तो जीवन प्रारंभ करते ही हम सबमें इतनी विषमता क्यों? अभी तो हमने कुछ किया ही नहीं! इसका उत्तर आधुनिक विज्ञान के पंडित 'वंश-परम्परा' और 'परिस्थिति' से देते हैं। माता-पिता के रज-वीर्य की भिन्नता, और जिन भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में वे अपनी सन्तानों को रखते हैं उससे प्राणी-प्राणी में भेद उत्पन्न हो जाता है। इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि हमने कुछ नहीं किया, माता-पिता ने किया, और उनके किये का फल उन्हें मिलने के स्थान में हमें मिला। माता-पिता के अच्छे-बुरे कामों का फला माता-पिता को मिलना चाहिये, या हमें? प्रश्नों का प्रश्न, महान् प्रश्न, वह प्रश्न जिसका 'वंश-परम्परा' तथा 'परिस्थिति' का नाम लेने वाले विज्ञान के पास कोई उत्तर नहीं है, यह है कि हमने क्या किया था जो हमें ऐसे माता-पिता के साथ बांध दिया गया जिनके रज-वीर्य में रोग के कीटाणु थे, जो हमें अच्छी परिस्थितियों में नहीं रख सकते थे? इसका उत्तर इसके सिवाय क्या दिया जा सकता है कि हम तो हैं ही नहीं--यह 'हम' एक आकस्मिक घटना है, हम आकस्मिक रूप में ही उत्पन्न हो गये, और आकस्मिक रूप में ही समाप्त हो जायेंगे। परन्तु कार्य-कारण का अटल नियम मानने वाले विज्ञान के यहां तो आकस्मिक कुछ है ही नहीं। ऐसी अवस्था में 'वंश-परम्परा' और 'परिस्थिति' मान लेने से ही जन्म की प्रारंभिक विषमताओं को आकस्मिक, अकारण मानना पड़ता है। इसके अतिरिक्त अच्छे माता-पिता बुरी संतान, बुरे माता-पिता की अच्छी संतान, उत्तम-से-उत्तम परिस्थिति में नीच-से-नीच व्यक्ति, नीच-से-नीच परिस्थिति में उत्तम-से-उत्तम व्यक्ति क्यों पैदा हो जाते हैं? फिर, अन्त में, यह सारा लेखा एकदम समाप्त हो जाता है। ऐसा क्यों? हरेक बही-खाता जब शुरू होता है, तो कुछ रकम लेकर शुरू होता है, हर दिन के जोड़ में कुछ लेना, कुछ देना बना रहता है, साल के बाद जब दूसरी बही खोली जाती है तब पिछली का लेना-देना अंकित करके हिसाब आगे चलता है। क्या जीवन की बही बिना किसी हिसाब के है? यह बिना लेने-देने के शुरू हो जाती है, बिना लेखा पूरा किये समाप्त हो जाती है? ऐसा कैसे हो सकता है?--नहीं हो सकता, विज्ञान भी जबतक कार्य-कारण के नियम पर स्थित है आर्य-संस्कृति के कर्म के सिद्धान्त से इन्कार नहीं कर सकता।

कर्म तथा मतमतान्तर-

यहूदी, ईसाई तथा मुसलमान कर्म के सिद्धान्त को अटल रूप से नहीं मानते। उनका कहना है कि इस जन्म में परमात्मा ने आत्मा को पैदा कर दिया। उनके कर्मों के कारण पैदा कर दिया, या यूं ही पैदा कर दिया--इसका उनके पास कोई उत्तर नहीं। इस जन्म में अच्छे कर्म करने वाले स्वर्ग चले जायेंगे, बुरे कर्म करने वाले नरक चले जायेंगे। वे वर्तमान वैज्ञानिकों की तरह जीवन का आकस्मिक उत्पन्न होना तो मानते हैं--भले ही परमात्मा ने उत्पन्न किया हो, हुआ तो यूं ही, बिना हमारी जिम्मेदारी के-परन्तु वर्तमान वैज्ञानिकों की तरह इस सब हिसाब-किताब को अकारण राख करके चल देना नहीं मानते। इस जन्म के कर्मों का फल स्वर्ग या नरक मानते मानते हैं, और स्वर्ग-नरक को अनन्त मानते हैं? परन्तु इस जन्म के थोड़े-से, सान्त कर्मों का अनन्त फल कैसे हो सकता है? हमने इस जन्म में कुछ अच्छे काम किये, कुछ बुरे किये। अगर अच्छे बुरे की अपेक्षा कुछ ही ज्यादा हो गये, तो हमें सदा के लिये स्वर्ग मिल गया, अगर कुछ कम रह गये, तो सदा के लिए नरक में धकेल दिये गये-यह विचार कार्य-कारण के नियम के विपरीत है। कर्म का सिद्धान्त अगर ठीक है, तो पूर्व-जन्म भी मानना पड़ता है, पुनर्जन्म भी मानना पड़ता है। यह तो हमें दीख रहा है कि अगर कार्य-कारण का नियम एक सत्य-नियम है, तो कर्मों का लेखा भी एक अमिट लेखा है, यह हिसाब पीछे से चला आता है, इस जन्म में यह हमारे हाथ में आ जाता है, और जब इस जन्म में हम जीवन की इस बही को बन्द करते हैं तो आगे कहीं इसी लेन-देन से अगला हिसाब शुरू करते हैं, इसी हिसाब से बंधे रहते हैं। और कोई कल्पना कार्य कारण के नियम को छोड़ कर ही की जा सकती है, इसके बिना नहीं। कर्म के सिद्धान्त का आधारभूत तत्त्व यह है कि कर्म का फल अवश्य मिलता है। मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या यह रही है कि कर्म तो वह कर लेता है, परन्तु अगर उसका कड़वा फल मिले तो उससे बचना चाहता है। मन की इसी कमजोरी के कारण फल से बचने के मनुष्य अनेक उपाय ढूंढता है।

('आर्य संस्कृति के मूलतत्व' ग्रंथ से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला-8

शंकर और दयानन्द

-महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती-

यह है सरल और सीधी विधि, अन्दर की ध्वनि सुन कर इन्द्रियों को वश में रखने की। और स्मरण रक्खो, अन्दर की ध्वनि सुनाई देती है प्रत्येक समय। नहीं सुनाई देती उन व्यक्तियों को जिन्होंने बाहर इतना कोलाहल मचा रक्खा है कि अन्दर की ध्वनि दब कर रह गई है। कमरे में घड़ी लगी हुई है। उसकी टिक टिक भी होती है, परन्तु बाहर यदि बाजे बज रहे हों, कोलाहल हो रहा हो, तो घड़ी की ध्वनि कैसे सुनाई देगी। बाहर का कोलाहल बन्द करो, अन्दर की ध्वनि आयेगी अवश्य।

अन्दर के पट तब खुलें-
जब बाहर के पट देय।

बाहर की इन्द्रियों को वश में करो अन्दर से ध्वनि आयेगी। ईश्वर की प्रेरणा सुनाई देगी। आँख कहेगी, 'अमुक सिनेमा बहुत अच्छा है, चलो देखें। मन प्रसन्न होगा।' परन्तु आप कहेंगे, 'आँख तो मेरा सेवक है, मैं आँख का दास नहीं। मुझे उल्टे मार्ग पर न ले जा।' इसी प्रकार प्रत्येक इन्द्रिय को वश में करने का प्रयत्न करो ऐसा करने से वह सम्पत्ति प्राप्त होगी जिसे दम कहते हैं।

दम के पश्चात् तीसरी सम्पत्ति है तितिक्षा-सहन करने की शक्ति। शोक हो या रोग, दुःख हो या क्लेश, संकट हो या आपत्ति, सब को सहन करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाना। इसके लिये शरीर को शक्तिशाली बनाना चाहिए ऐसा बनाना चाहिये कि वह गर्मी सर्दी, आपत्ति विपत्ति सबका साम्मुख्य कर सके। मन की दशा ऐसी होनी चाहिये कि सुख हो या दुःख, जो लक्ष्य अपने समक्ष रक्खा है उसे प्राप्त किये बिना पीछे न हटना पड़े। शरीर के लिये चरक ने कहा है, 'जिसके अन्दर तीनों दोष सम अवस्था में रहते हैं, दोनों प्रकार की अग्नि सम रहती है, जिसके अन्दर धातु और मल ठीक रूप से कार्य करते हैं और जिसका आत्मा इन्द्रिय और मन प्रसन्न है वह स्वस्थ है। दोष हैं-कफ, वात और पित्त, तीनों सम रहें तो मनुष्य ठीक रहता है। अग्नि दो प्रकार की है जठराग्नि और रक्ताग्नि, दोनों में से कोई भी बढ़ जाये या कम हो जाये तब रोग आते हैं। धातु है लोहा आदि। रक्त के अन्दर उन का परिमाण ठीक रहे तो कार्य चलता है, नहीं तो ठप्प होकर बैठ जाता है।' यह पहचान इस बात की, कि आप का शरीर तितिक्षा की दशा में है या नहीं।

तितिक्षा के पश्चात चौथी सम्पत्ति का नाम है उपरति। इसका अर्थ है दुष्ट व्यक्तियों के संग से बचना। दुष्ट को सुधारने का प्रयत्न करना अवश्य। यदि वह सुधर नहीं पाता तो उससे परे हट जाना, उसके संग को त्याग देना। संगत अच्छी हो तो अच्छे परिणाम निकलते हैं, अच्छी न हो तो बुरे परिणाम समक्ष आते हैं।

उपरति के पश्चात् पाँचवीं समपत्ति है श्रद्धा, जिसके बिना कोई कार्य नहीं बनता। यदि तुम्हें पथ प्रदर्शक की आवश्यकता है तो पहले किसी व्यक्ति को अच्छी प्रकार जाँच कर देख लो। पूछताछ करो उसके सम्बन्ध में, और जब ज्ञात हो जाये कि वह पथ प्रदर्शन करने के योग्य है, तब उस पर पूरे विश्वास के साथ श्रद्धा करके, जो कुछ वह कहता है, उसे करते चले जाओ। श्रद्धा नहीं होगी तो ध्यान रक्खो, ठीक मार्ग दिखाने वाला भी तुम्हारे लिये कुछ नहीं कर पायेगा। श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं-'श्रद्धा से ज्ञान मिलता है, ज्ञान से शान्ति।' वेद भगवान भी कहता है-'श्रद्धा से अग्नि जलती है श्रद्धा से हवि होमी हो जाती है। हम यह घोषणा करते हैं कि श्रद्धा ऐश्वर्य और सुख की चोटी पर रहती है।'(ऋ.१/१५१/१)

और श्रद्धा के पश्चात् छठी सम्पत्ति है समाधान--मन को बाहर की ओर से हटा कर अन्दर की ओर एकाग्र कर देना। यह है षट् सम्पत्ति। परन्तु इसके सम्बन्ध में अभी कुछ और बातें भी कहनी हैं। आज समय हो गया है समाप्त, आगे चौथे भाषण में कहूँगा।

।।ओ३म् शम्।।

चौथा दिन

मेरी प्यारी माताओं और सज्जनों!

ब्रह्म क्या है? किस प्रकार इसको प्राप्त किया जाता है? किस प्रकार उसकी गवेषणा की जाती है? इसकी बात करने से पूर्व जिज्ञासु में चार बातों का होना आवश्यक है। इनमें से तीसरे गुण षट् सम्पत्ति के बारे में आपको कह रहा था। षट् सम्पत्ति का अर्थ है छः प्रकार की सम्पत्ति। पहली सम्पत्ति है 'शम' दूसरी 'दम' तीसरी 'तितिक्षा', चौथी 'उपरति', पाँचवीं 'श्रद्धा' और छठी 'समाधान'। शम की बात तो पर्याप्त विस्तार से आपका बता चुका। तितिक्षा का अर्थ है सहन करने की शक्ति। शारीरिक और मानसिक रूप से प्रत्येक बात को सहन करना। सहनशक्ति समाप्त हो जाये तो कितना अनर्थ होता है, यह मिश्र में देखिये। मिश्र ने स्वेज को अपने अधिकार में कर लिया। बरतानियां का स्वार्थ इसे सहन नहीं कर सका। अशान्ति की आग जल उठी। संसार की भाँति परिवारों में भी सहन शक्ति न होने के कारण आपत्ति आती है। आपत्ति से बचने का सीधा मार्ग यह है कि न केवल स्वयं मीठा बोलो, अगर दूसरे कड़वा बोलें तो उसे भी सहन करो। न केवल स्वयं ठीक मार्ग पर चलो, अपितु दूसरे यदि उल्टे मार्ग पर भी चलें तो उन्हें सहन करो। नहीं करोगे तो पहले क्रोध जागेगा, फिर दुःख जाग उठेगा। इसी प्रकार उपरति की महिमा को मैंने बताया। उपरति का अर्थ है बुरी संगत का त्याग। संगत का कितना प्रभाव होता है, यह इस बात से देखिये कि यमुना नदी आपके समीप बहती है। उसका पानी आपके क्षेत्रों और उद्यानों में पहुँचता है। जो पानी आम के वृक्ष की जड़ में जाता है, वह मधु की भांति मीठा हो जाता है जो मिर्च के पौधे की जड़ में जाता है, वह इतना तीखा हो जाता है कि उसे चखते ही लोग तड़प उठते हैं। यमुना का पानी तो एक है, संगत के कारण एक स्थान पर वह एक वस्तु बनता है, दूसरे स्थान पर दूसरी वस्तु। संगत के प्रभाव से पानी की यह दशा होती है, तो मनुष्य की क्यों न होगी। विद्वान् लोग कहते हैं, मनुष्य अपनी संगत से पहचाना जाता है, मैं कहता हूँ संगत मनुष्य को बनाती है। अतः सौ कार्य छोड़कर भी सत्संग में सम्मिलित होना चाहिये। सहस्र कष्ट होने पर भी बुरी संगत से दूर रहने का प्रयत्न करना चाहिये। इसी प्रकार मैंने श्रद्धा के सम्बन्ध में बताया कि किस प्रकार वह मनुष्य का बेड़ा पार करती है। आज की सभ्यता ने सबसे बड़ा पाप किया यह कि लोगों की श्रद्धा समाप्त कर डाली।

प्रत्येक बात में तर्क करने और युक्ति देने की रीति उत्पन्न कर दी। शास्त्रार्थ बहुत करते हैं हम परन्तु किसी परिणाम पर नहीं पहुँच पाते। मैं यह नहीं कहता कि शास्त्रार्थ नहीं करना चाहिये। सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने के लिए बुद्धि से अवश्य कार्य लेना चाहिए, परन्तु कहीं पहुँचना भी तो चाहिए। केवल शास्त्रार्थ के लिये शास्त्रार्थ करते रहना क्या हुआ? जो व्यक्ति युक्ति लड़ाने के लिए युक्ति लड़ाते हैं वेद उन्हें जल्पी कहता है।

जल्पी क्या करते हैं, उसे समझने के लिये एक कहानी सुनिये। एक थे पति और पत्नी। नया विवाह हुआ। अलग रहने के लिये एक मकान उन्होंने किराये पर लिया। एक सेठ साहब का मकान वह। नीचे के भाग में सेठ जी स्वयं रहते थे ऊपर के भाग में यह पति और पत्नी। अपने मकान को उन्होंने कुर्सियों और कौचों से सजाया। मेजों और बत्तियों से सजाया, परदों और कालीनों से सजाया। बहुत प्यार से रहते थे वे। एक दिन सेठ ने सुना कि वे दोनों झगड़ा कर रहे हैं। पत्नी भी ऊँचे-ऊँचे बोल रही थी, पति भी। युद्ध छिड़ गया प्रतीत होता था। सेठ जी पर्याप्त समय तक प्रतीक्षा करते रहे कि झगड़ा समाप्त हो जाये, परन्तु वह समाप्त नहीं हुआ। आवाज के तोपखाने पूरे वेग से चल रहे थे। तब सेठ साहब घबरा कर ऊपर गये बोले, किस बात पर झगड़े जाते हो, तुम तो कभी झगड़ते नहीं थे। तुम्हारे जैसे अच्छे लोग मैंने देखे नहीं। फिर आज क्या हुआ?' पति ने कहा, 'देखिये सेठ जी, आप ही कुछ बुद्धि दीजिये। मैं कहता हूँ हम लड़के को वकील बनायेंगे। आनन्द से रुपया कमायेगा। समय पर कचहरी जायेगा, समय पर वापस आयेगा। ये मूर्खा कहती है कि इसे डाक्टर बनायेंगे। अब बताइये डाक्टर का जीवन भी कोई जीवन है, दिन को शान्ति न रात्रि को विश्राम। डाक्टर बनाना तो उससे शत्रुता करना होगा।' सेठ ने श्रीमती से पूछा तो वह बोली-'मेरे भाग्य खोटे थे जो इनके पल्ले पड़ी, इन्हें तो रुपयों के अतिरिक्त कुछ सूझता ही नहीं और फिर डाक्टर क्या रुपया नहीं कमाते, रुपया कमाते हैं, दुःखियों की सेवा भी करते हैं। वकील का जीवन क्या है, हर समय झूठ हर समय चिन्ता। मैं तो लड़के को डाक्टर ही बनाऊँगी।' सेठ साहब ने सोचते हुए कहा, 'इसके लिए इतना झगड़ा करने की क्या आवश्यकता है। लड़के से पूछ तो लो। यदि वह डाक्टर बनना चाहता है तो डाक्टर बना दो, वकील बनना चाहता है तो कानून पढ़ा दो। आओ! मैं तुम्हारे लड़के को पत्र लिखता हूँ, जो कुछ वह कहे उसे तुम दोनों मान लेना।' दोनों ने एक साथ कहा, 'परन्तु लड़का तो अभी पैदा नहीं हुआ।'

ऐसे लोगों को कहते हैं 'जल्पी'। सूत न कपास घर में लठ्ठम लठ्ठा। ऐसे व्यक्तियों में श्रद्धा नहीं होती, श्रद्धा नहीं हो तो ज्ञान नहीं होता, ज्ञान न हो तो मन को एकाग्रता नहीं मिलती, मन एकाग्र न हो तो ईश्वर नहीं मिलता।

('शंकर और दयानन्द' से, क्रमशः)

काव्यायन

बसन्त

❑राघवेन्द्र शर्मा त्रिपाठी 'ब्रजेश'

रसिक रसाल कढ़ि मंजरी सोहान लागी
गान लागी कल कण्ठ कोयल सुढंग मैं।
खेतन मैं पीरी सरसों है दरसान लागी
भावती अमान लागी भावते के अंग मैं।
फूली कंज कलिका करन गंध दान लागी
भ्रमरावली त्यों पान लागी रस रंग मैं।
आवत बसन्त सुखमा यों सरसान लागी
सुख बरसान लागी प्रकृति उमंग मैं।।

नैनन की निधि हौ छबि पुंज हौ
बैनन के गुन गन्त हौ या तुम।
भूरि पराग की धूरि धरे
बन बाग बसे रसे सन्त हौ या तुम।
बेस ब्रजेश सुराग रँगी
सुखमा सुख तन्त के कन्त हौ या तुम।
प्रेम बियोगिन के तन अन्त हौ
लोक लसन्त बसन्त हौ या तुम।।

–'ब्रजेश विनोद' से

बसंत

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

मनमोहक बसंत आया है,
पुष्प खिले हैं वन-उपवन। ?
नवल प्रकृति की सुषमा न्यारी,
महक रही है क्यारी-क्यारी,
बीत गयी है ऋतु पतझड़ की,
बजे हवा की पायल छन-छन।
अमरायी में कोयल बोले,
कानों में मधुरस-सा घोले,
रंगबिरंगी उड़ें तितलियाँ,
चंचल भौरं गाते गुन-गुन।
नन्हीं कलियों-सा मुस्काओ,
सदा सुहाने स्वप्न सजाओ,
जाग उठी हैं नयी उमंगे,
और हुआ आशामय जीवन।

–117, आदिल नगर, लखनऊ–22

घर-घर हवन जरूरी

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

कोरोना कहँ कम मत मानौ, यू रोजुहि डरवावै।
ऊपर नीचे नित्य आँकड़न महँ देखहु करवावै।।
जड़सन मिटइ हटइ कोरोना, टीका करन जरूरी।
घर सन बाहर तबहें निकसौ, जब देखहु मजबूरी।।
जायो नहीं मास्क बिन बाहेर, सब कहँ यहै बतावौ।
कफ-खाँसी-ज्वर जो सरीर महँ, डाक्टर पहिं लइ जावौ।।
दुइ करबद्ध नमस्ते कीजै, छाड़हु हाथ मिलाउब।
मछरी मास दूर सब फ्याँकौ, दूध दही घृत खाउब।।
राखहु हर मनई से सबजन, दुइ मीटर कै दूरी।
वातववरण सुद्ध राखै मँह, घर-घर हवन जरूरी।।
अपनावौ सब नित्य स्वच्छता, बार-बार कर धोउब।
लड़ब कोरोना सन 'अबोध' हम, एकउ घड़ी न खोउब।।

–चन्द्रा मण्डप, 370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

जागोगे कब

❑डॉ. कैलाश निगम

जागे नहीं अब तो
जागोगे कब, पूछ रही
भोर की किरन है
जगा के तुम्हें बार-बार।
बरस अंगार रहे
नभ से विचार करो
युक्ति करो सुख-सरिता
की भी बहाओ धार।
संस्कृति की गंध
बसी माटी में रहे पुनीत
प्रेम और न्याय का
लुटाते रहो उपहार।
पयमुख वाला विष-
कुम्भ फोड़ डाला जाय
तोड़ डालें जायें
अनरीतियों के कारागार।

–4/522, विवेक खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ

आना तुम

❑रामा आर्य 'रमा'

मन आंगन में आना तुम।
गीत मिलन के गाना तुम।
उषा का रसपान किए।
सुरभित सौरभ मान लिए।
खेल-खेल प्राची का घूंघट,
रश्मि प्रभा सी आना तुम।
ग्रीष्म ज्वार में सावन सी।
सरस घटा मन-भावन सी।
तपन मिटाने उर अन्तर की,
रिमझिम रिमझिम आना तुम।
मधुपों की मधु गुन-गुन सी।
मधुपरियों की रस झुनझुन सी।
झंकृत करने मन वीणा को,
सप्त स्वरों सीं आना तुम।
जीवन पथ के दर्पण सी।
अन्तस भाव समर्पण सी।
पूरे करने स्वप्न अधूरे,
प्रणय निशा सी आना तुम।

–417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

हर्ष–चतुष्पदी

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

प्रात से अविरल रहा बहु काम से,
अध्ययन में लग गया इतने बजे ही शाम से,
जल्द ही विश्राम - पहुँचा शयन के आगोश में,
करवटें लेते बदलते सुबह आया होश में।।

भला घड़ी को कब कहाँ विश्राम है?
हर्ष भी है घड़ी सतत चलना काम है।
तेल मालिश और वर्जिश साथ रहती है सदा-
तभी तो 'हर्ष' हूँ - बाँके बिहारी नाम है!!

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

मैं वसन्त हूँ

(खड़ी बोली में बरवै छंद का अभिनव प्रयोग)

❑नागार्जुन

मैं वसंत, मैं मदनसखा सुकुमार
त्रिभुवन पर मेरा अखंड अधिकार
मैं मरु-उर में उद्भिद का अवतार
नवल सृष्टि विधि को मेरा उपहार
मैं धरती का यौवन, मैं शृंगार
ऋतुएँ करती हैं मेरा मनुहार

जगत् प्राण मैं चंचल मलयसमीर
सबको रखता हुलसित, सतत अधीर
भरता रहता हूँ कण-कण में पीर
चला-चलाकर सुरभि-श्वास के तीर
मैं अति चंचल, मैं अत्यन्त गंभीर
मुझमें घुलते मृगमद और उशीर

मैं नर-कोकिल, मेरी पंचम तान
पीने को उत्सुक रहते हैं कान
मेरे स्वर का है अचूक संधान
मिलन-मनोरथ हो उठता गतिमान
मुझसे दीपित विरहातुर के प्रान
'कुहू-कुहू' सुनते ही धुलता मान

चटुल भ्रमर मैं, मेरा गुंजन नाद
भरता है उर में मादक अवसाद
नहीं एक भी कान रहा अपवाद
छलकाता हूँ सात स्वरों का स्वाद
करते हैं गंधर्व सदा ही याद
सर्वप्रथम मैं, औरों के स्वर बाद

मैं झिल्ली : मेरी अविरत झंकार
स्वर-संहति को देती है आधार
मदिर उदासी पर चढ़ता ध्वनि-भार
गहराई को देती हूँ विस्तार
धीर-उदात्त यहाँ सब एकाकार
चिंता को पहुँचाती स्मृति के पार

('भस्मांकुर' से)

गीतिका रंगोत्सव की

❑प्रो. विश्वम्भर शुक्ल

सुस्नेह, आस्था, मृदुल विश्वास है होली,
इक प्यार की सुगंध है, सुवास है होली।

खुशियों से दोस्ती करें, शिकवे न शेष हों,
सबके लिए बहुत बहुत ये खास है होली।

करिये हवाले आग के विद्वेष कलह को,
हँसते हुए कदमों से आती पास है होली।

उनको गले लगाइए दिल खोलकर मिलें,
जिनकी किसी तकलीफ से उदास है होली।

भूलिए मलाल को चेहरों पे हो गुलाल,
फिर देखिये कैसी गजब बिंदास है होली।।

–538क/90, त्रिवेणी नगर–1, लखनऊ

राजस्थान-समाचार

कोटा में आर्य समाज ने मनाया ऋषिबोधोत्सव पर्व

कोटा, १२ मार्च। महाशिवरात्रि के अवसर पर गुजरात में जन्मे बालक मूलशंकर को हुए आत्मबोध ने ही उन्हें महान समाज सुधारक बनाया। उक्त विचार आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने शिवरात्रि के अवसर पर आर्य समाज कोटा द्वारा संयुक्त रूप से मनाए गए बोधोत्सव पर्व पर व्यक्त किए। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि बालक मूलशंकर को शिवरात्रि के अवसर पर जो बोध हुआ उससे उसके मन में सच्चे शिव को जानने की लगन लगी और कालांतर में यही उनके महान सुधारक बनने का कारण रहा। शिवरात्रि का यह बोधपर्व हमें पाखण्ड एवं अंधविश्वास से दूर रहकर सच्चे ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थर्मल के मुख्य अभियंता वी.के.गोलानी रहे तथा अध्यक्षता आर्य उपप्रतिनिधि सभा के संभागीय अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा ने की। इस अवसर पर मंच पर उपस्थित मुख्य अतिथि दम्पति का केसरिया साफा ओम का पटका व मोतियों की माला पहनाकर आर्य समाज द्वारा अभिनन्दन किया गया। इससे पूर्व समारोह का प्रारम्भ बृहद् यज्ञ के साथ हुआ। ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्रोच्चार पूर्वक हुए देवयज्ञ में उपस्थित आर्यजनों ने आहुति प्रदान की। भजनोपरान्त श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज विशाल वट वृक्ष बन गया है, जिसकी दुनिया के ३२ से अधिक देशों में शाखाएं हैं जिनके माध्यम से अंधविश्वास व पाखंड के प्रति लोगों को जाग्रत करने का कार्य किया जा रहा है साथ ही वैदिक धर्म एवं संस्कृति के सद्विचार आमजनों तक पहुंचाने के कार्य किए जा रहे हैं।

कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज कुन्हाड़ी के प्रधान पी.सी.मित्तल ने किया। इस अवसर पर कोटा की विभिन्न आर्य समाजों के प्रधान, मंत्री, अधिकारीगण तथा पतंजलि योग समिति के राज्य प्रभारी अरविन्द पाण्डेय सहित योग परिवार के सदस्य तथा बड़ी संख्या में आर्यजन उपस्थित रहे। *(अर्जुनदेव चड्ढा)*

अर्जुनदेव चड्ढा ने लगवाया कोरोना का टीका

कोटा, १२ मार्च। आर्य उपप्रतिनिधि सभा कोटा संभाग के प्रधान आर्यनेता अर्जुनदेव चड्ढा विज्ञान नगर स्थित राजकीय डिस्पेंसरी में कोरोना-१९ से बचाव के लिए टीका लगवाया। टीककरण के अवसर पर चिकित्सा विभाग की डॉक्टर सविता शर्मा मुख्य चिकित्सा अधिकारी, डॉ.मुकेश सुवालका नोडल प्रभारी, इंदिरा शृंगी ए.एन.एम., योगेश गौड़ पब्लिक हेल्थ मैनेजर, नलेश मीणा तथा नीता जसवानी जे.एन.एम.उपस्थित थे। टीकाकरण के उपरान्त अपने संदेश में श्री चड्ढा ने कहा कि सभी नागरिकों को सरकारी नियम के अनुसार समय पर कोविड-१९ के दुष्प्रभाव से बचाव के लिए पहली एवं दूसरी डोज लगवा कर टीकाकरण करवाना चाहिए। साथ ही मास्क लगाये रहें व हैंड सैनिटाइजर का प्रयोग करते रहें।

उत्तराखण्ड-समाचार

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार की पुण्यश्लोक- माता रुक्मिणी जी माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास का उत्तरदायित्व पूर्ण कार्यक्रम संचालित कर रही थीं। उनके निधन के उपरान्त उनकी सुपुत्री करुणा माहेश्वरी को न्यास का कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया है। न्यास के मंत्री का गुरुतर दायित्व जाने माने विद्वान् डॉ.महावीर अग्रवाल को तथा प्रधान पद का दायित्व श्री गिरधारी लाल चाँदवानी को सौंपा गया है। आशा है, न्यास की लोक कल्याणकारी योजनाएँ पूर्ववत संचालित होती रहेंगी तथा संस्थापक स्व.स्वामी आत्मबोध सरस्वती (आर्यभिक्षु) की मंशा के अनुरूप कार्यक्रम चलते रहेंगे।

अमृतमुनि लेंगे संन्यास की दीक्षा

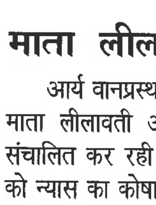

श्री अमृतमुनि जी वानप्रस्थी (१/२३, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार) आगामी चैत्र प्रतिपदा संवत् २०७८ को नवसंवत्सरारम्भ एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के मंगलमुहूर्त में ऋषि उद्यान अजमेर में संन्यास आश्रम की दीक्षा ग्रहण करेंगे। लखनऊ के संन्यासियों की गरिमामयी परम्परा में अमृतमुनि जी तीसरे संन्यासी होंगे। अनुमानित है कि उनके संन्यासाश्रम का नाम अमृतानंद अथवा अमृतबोध होगा। आशा है, अमृतमुनि जी वैदिक संन्यासियों की गौरवमयी परम्परा को एक नया आयाम प्रदान करने में समर्थ होंगे।

निवेदन

सविनय अनुरोध है कि समस्त होता-ऋत्विक, सक्रिय तथा सामान्य सदस्य गण अपनी अपनी सहयोग राशि हमें उपलब्ध करा दें। आपकी दानशीलता का 'आर्य लोक वार्ता' से बढ़कर उपयुक्त पात्र और कोई नहीं हो सकता है क्योंकि यह एकमात्र विज्ञापनों, वैयक्तिक प्रशस्ति तथा रागद्वेष रहित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक है। हर प्रकार का सहयोग आप 'आर्य लोक वार्ता' के पृष्ठ ८ पर प्रकाशित विवरण के अनुसार बैंक ऑफ बड़ौदा में 'आर्य लोक वार्ता' के नाम से जमा पर्ची भरकर नकद/चेक द्वारा जमा कर दें तथा इसकी सूचना चलभाष द्वारा हमें अवश्य दें। -प्रधान सम्पादक

सीतापुर-समाचार

सहृदय एवं मिलनसार थे डॉ.राजेन्द्र साहू

सीतापुर का एक सुयोग्य व्यक्तित्व अब हमारे बीच नहीं है। बात है-डॉ. राजेन्द्र साहू की- जिनका निधन गतवर्ष नवम्बर में हो गया था। आप आर्य लोक वार्ता सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य के छात्रावस्था के निकट सहयोगी थे तथा आर्य वीर दल सीतापुर को डॉ.साहू की सेवाएँ उपलब्ध हुई थीं। राजेन्द्र साहू श्री श्यामसुन्दर साहू एवं श्रीमती तारा साहू के पुत्र थे। आपका जन्म २६.०७.१९४१ को हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा सीतापुर में प्राप्त करने के बाद आपने पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की तथा राजकीय महिला पालीटेक्निक लखनऊ में कार्यरत रहे। आप अपने पीछे पुत्र श्री सौरभ साहू, पुत्री उपमा साहू, डॉ.श्वेता साहू, पौत्री कृतिका साहू को छोड़ गये हैं। श्रद्धांजलि!

वीरजी की पत्नी दिवंगत

वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी' के निधन के २२ दिन बाद ही दि.२२.०१.२०२१ को उनकी धर्म परायणा पत्नी श्रीमती निशा निगम (८०) ने भी अपनी आँखें मूंद लीं। उसी दिन वैदिक विधि से आपकी अन्त्येष्टि तथा २३.०१.२१ को शान्तियज्ञ आचार्य पं.शचीन्द्र मिश्र शास्त्री ने सम्पन्न कराया। श्रीमती निशा उन्नाव जनपद के निवासी स्व.रामनारायण निगम की पुत्री थीं। आप अपने पीछे दो पुत्र-यतीन्द्र तथा योगेन्द्र, तीन पुत्रियों-मैत्रेयी, अंजली, जया का परिवार छोड़ गई हैं। पुत्रियाँ विवाहित हैं तथा दोनों पुत्र अपने अपने कार्यों का सफल संचालन कर रहे हैं।

आर्य समाज सीतापुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज आर्य नगर सीतापुर का वार्षिक उत्सव १६, १७ फरवरी २१ को बसंत पंचमी पर्व के साथ प्रधान चौधरी रणवीर सिंह की अध्यक्षता में सोल्लास सम्पन्न हुआ। विशिष्ट वक्ताओं में आचार्य विश्वव्रत शास्त्री, लखनऊ तथा श्री घनश्याम प्रेमी भजनोपदेशक का नाम उल्लेखनीय है। नशा उन्मूलन आन्दोलन में सक्रिय श्री देवेन्द्रपाल वर्मा एवं श्री विमल किशोर आर्य लखनऊ का आर्य समाज द्वारा स्वागत किया गया। आर्यमित्र सम्पादक श्री शिवशंकर लाल वैश्य (कोषाध्यक्ष, आर्य समाज सीतापुर) एवं स्वामी महावीर जी ने अपनी उपस्थिति से उत्सव को गौरवान्वित किया। बड़ी संख्या में आर्य नर-नारियों ने उत्सव को सफल बनाया, जिन्हें प्रधान जी ने साधुवाद दिया। *(शचीन्द्र मिश्र शास्त्री)*

वीरजी को श्रद्धांजलि

-पाल प्रवीण

श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी' को मैं आर्य लोक वार्ता के माध्यम से ही नहीं वरन् वर्ष १९७२-७३ से परिचित रहा हूँ। मैंने यूनियन बैंक आफ इण्डिया सीतापुर की शाखा खोलने की जिम्मेदारी जो मुझे प्रबंधन ने सौंपी थी उसे १९७३ में पूरा किया। लखनऊ से लगातार मैं सीतापुर जाता रहा- वहाँ के सम्भ्रांत नागरिकों, व्यापारियों, बुद्धिजीवियों व प्रशासन के अधिकारियों से मिला क्योंकि शाखा का शुभारम्भ शानदार तरीके से करना था। उसी क्रम में वहीं मेरा प्रथम परिचय 'वीरजी' से हुआ। उनसे मैं बहुत प्रभावित हुआ। तबसे बार बार उनसे सम्पर्क होता रहा। सारी घटनाएँ एवं वीरजी से विचारों का आदान प्रदान आज भी मेरे मस्तिष्क में घूम रहा है। मैं परमपिता से प्रार्थना करता हूँ कि वीरजी की आत्मा को शांति मिल तथा उनके परिवार के सदस्यों को यह दुःख सहन करने की शाक्ति एवं धैर्य प्रदान करे।

(स्व.वीरजी आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह में एक बार आकस्मिक रूप से आये थे-जब समारोह चल रहा था। अतः अगले सम्मान समारोह में उनके सम्मान का कार्यक्रम विधिवत् रखा गया था किन्तु अस्वस्थता के कारण वे नहीं आ सके। तथापि बाद में कुछ ही दिन बाद वे आर्य लोक वार्ता कार्यालय में पधारे जहाँ उन्हें सम्मान प्रतीक, अंग वस्त्रम् इत्यादि से सम्मानित किया गया जिसका समाचार भी आर्य लोक वार्ता में प्रकाशित हुआ था। -सम्पादक)

लखनऊ-समाचार

भाषा प्रतिष्ठापन आन्दोलन के सेनानी डॉ.मोहनलाल अग्रवाल नहीं रहे

अखिल भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष, से.नि.अपर निदेशक-उ.प्र.गन्ना परिषद एवं उपप्रधान-आर्य समाज लालबाग लखनऊ का दिनांक २६.०२.२१ दिन शुक्रवार को हृदयाघात से आकस्मिक निधन हो गया। अभी ६ मास पूर्व पत्नी श्रीमती सावित्री के निधन-शोक से अग्रवाल परिवार उबर भी नहीं पाया था कि डॉ.अग्रवाल के आकस्मिक निधन से वह गहरे शोक में डूब गया। अंतिम साँस तक सामाजिक सरोकारों से क्रियाशील, मृदुभाषी, ईमानदार, स्वच्छ छवि वाले मोहनलाल अग्रवाल अपनी पुत्री शोभा जी के साथ कुछ खरीदारी करने बाजार गये थे, जहाँ यह दुःखद घटना घटी- जिसने सभी को स्तब्ध कर दिया।

वैदिक विधि से उनका अन्त्येष्टि संस्कार भैंसाकुण्ड शवदाह स्थल पर अगले दिन किया गया तथा १ मार्च २०२१ दिन सोमवार को शान्तियज्ञ तथा शोकसभा का आयोजन परिषद की लखनऊ शाखा अध्यक्ष श्री महेशचन्द्र द्विवेदी (पूर्व डी.जी.पी.) की अध्यक्षता में हुआ जिसमें स्व.अग्रवाल के निकट सहयोगी श्री राजेश प्रकाश शर्मा 'आग्नेय', श्रीमती कान्ति कुमार, श्री अक्षय भाई, शालिग्राम, आर.डी. वर्मा, धुरेन्द्र स्वरूप बिसारिया, नवनीत निगम, डोरीलाल आर्य, अखिलेश शास्त्री, आचार्य रूपचन्द्र दीपक, श्रीमती शोभा अग्रवाल, मनीष कुमार एवं मनोज अग्रवाल ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। वक्ताओं ने डॉ.अग्रवल की कर्तव्यनिष्ठा, मिलनसारिता, विनम्रता, कर्मठता, सच्चरित्रता इत्यादि सद्गुणों का आख्यान किया।

मानवीय संवेदनाओं के अक्षयकोष--राजकीय सेवानिवृत्ति के बाद उनका कार्यकाल ऐतिहासिक रहा। सेवक बन्धुओं के निधनोपरान्त आपने आर्य समाज लालबाग की कमान सँभाली और उस संस्था को जीवित जाग्रत रखा। श्री योगेश मोहन के आवास पर विधिवत् उसके साप्ताहिक सत्संगों का आयोजन किया। इसी तरह भारतीय भाषाओं के प्रतिष्ठापन आन्दोलन की जब बागडोर आपने सँभाली तो भाषा प्रतिष्ठापन परिषद, लखनऊ के अध्यक्ष पद का गुरुतर दायित्व आपने साहित्यभूषण श्री महेशचन्द्र द्विवेदी को सौंपा और उनके साथ मिलकर अनेक बहुमूल्य गोष्ठियाँ, सेमिनार, सम्मेलन, उत्सव आयोजित किये तथा 'हिन्दी-गरिमा' से सम्बन्धित कई वार्षिक अंक प्रकाशित किये।

'आर्य लोक वार्ता' के तो आप अनन्य हितैषी थे। 'आर्य लोक वार्ता' विशेष रूप से आपके अभिनन्दन की योजना इस बार बना रहा था कि आपने विदाई ले ली। विदा से पूर्व एक शब्द भी नहीं कहा-

जब तक कुछ अपनी कहूँ सुनूँ उनके मन की,
तब तक डोली ले द्वार विदा क्षण आ पहुँचा।

अत्यावश्यक

'आर्य्य लोक वार्ता' वैदिक विचारधारा के प्रति जन-जन के प्रेम, श्रद्धा, विश्वास और संकल्प के बलबूते विगत २२ वर्षों से अनवरत प्रकाशित हो रहा है। इसका मुख्य आधार है, हमारे ऋत्विक्/होता/संरक्षक-सदस्य। अस्तु आज की विषम परिस्थितियों में हमारा आपसे विनम्र अनुरोध है कि अविलम्ब आपना आर्थिक योगदान हमें उपलब्ध कराकर वैदिक धर्म और महर्षि दयानन्द की विचारधारा के प्रचार-प्रसार के इस अभियान में शामिल होकर पुण्य के भागी बनें।

सहयोग राशि बैंक ऑफ बड़ौदा की किसी भी शाखा में नकद/चेक द्वारा जमा कर सकते हैं (बैंक का विवरण पृ.८ पर अंकित है) तथा इसकी सूचना हमें मोबाइल या पत्र द्वारा अवश्य ही दें। इसके अतिरिक्त निम्नांकित स्वाध्याय केन्द्रों पर उनके केन्द्राध्यक्ष/संचालक के पास जमा कर सकते हैं। अधिकृत स्वाध्याय केन्द्रों की यहाँ सूची प्रकाशित की जा रही है-

स्वाध्याय केन्द्र तथा केन्द्राध्यक्ष/संचालक तालिका

श्री पाल प्रवीण, योगाश्रम, अलीगंज, **लखनऊ**	(7309820587)
श्री आचार्य आनन्द मनीषी, वेदमंदिर, राजाजीपुरम, **लखनऊ**	(9935391794)
श्री रण सिंह, आर्य समाज, चन्द्रनगर, आलमबाग, **लखनऊ**	(9415956866)
श्री आत्म प्रकाश बत्रा, आर्य समाज, आदर्श नगर, **लखनऊ**	(9335240899)
श्री डोरीलाल आर्य, आर्य समाज, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**	(9889090411)
श्री बालगोविन्द पालीवाल, आर्य समाज, गोमती नगर, **लखनऊ**	(9792373494)
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', नेवाजगंज, चौक, **लखनऊ**	(9919790264)
श्री प्रेमचन्द्र शर्मा, बहादुर पुर, **लखनऊ**	(8799521631)
श्री भानु प्रताप सिंह चौहान, जानकीपुरम, **लखनऊ**	(8799521631)
श्री शचीन्द्र मिश्र शास्त्री,, **सीतापुर**	(9450379549)
श्री पं.राजकुमार शास्त्री, पारा रमनगरा, **सीतापुर**	(7651905966)
डॉ.सत्य प्रकाश, आर्य समाज, सण्डीला, **हरदोई**	(9450858750)

गुजरात-समाचार

गुरुकुल भवन का शिलान्यास

चार करोड़ की लागत से होगा निर्माण

आर्य जगत के उद्भट विद्वान त्यागी तपस्वी वीतराग योगेश्वर स्वामी सत्यपति

जी महाराज द्वारा संस्थापित वान्प्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ (गुजरात) के गुरुकुल भवन के शिलान्यास का कार्यक्रम पिछले दिनों सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि थे- गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी। गुरुकुल भवन; जिसमें एक सौ छात्रों के निःशुल्क आवास, भोजन, वस्त्र इत्यादि की सुंदर व्यवस्था सुनिश्चित की गई है; के निर्माण हेतु चार करोड़ की लागत अनुमानित है। उक्त राशि आचार्य देवव्रत जी की अपील पर कुछ ही समय में गण्यमान आर्यजनों द्वारा संकलित कर दी गई। दानवीरों में श्री शेखर अग्रवाल जी (यू.एस.ए.) का नाम उल्लेखनीय है।

कार्यक्रम का संचालन स्वामी सत्यपति जी के उत्तराधिकारी आचार्य विष्वङ् जी ने किया तथा संयोजन का दायित्व आचार्य सत्यजित् ने संभाला। यह भव्य समारोह लोगों के हृदयों पर आर्य संस्कृति का अनूठी छाप छोड़ गया।

लखनऊ-समाचार

स्वामी सत्यपति जी महाराज को विनम्र श्रद्धांजलि

पूज्य आचार्य सत्यजित् जी की कृपापूर्ण स्वीकृति से जब मैं १ जून २०१८ को सांख्य तथा योगदर्शन का अध्ययन करने हेतु रोजड़ गया तो मेरी कुटिया स्वामी जी की कुटिया के ऊपर थी। लगभग छः मास प्रवास के अंतराल में प्रतिदिन प्रातः भ्रमण के समय स्वामी जी के दर्शन होते थे। कभी कभी कुछ पूंछते तथा बताते भी थे। पूज्य स्वामी सत्यपति जी ४ फरवरी २०२१ को प्रातः लगभग ७.४५बजे इस नश्वर शरीर को छोड़कर परमपिता परमात्मा की गोद में चले गये। अन्त्येष्टि संस्कार ५ फरवरी २०२१ को वानप्रस्थ साधक आश्रम में २ से ५ बजे तक हुआ। श्रद्धांजलि सभा ६ फरवरी २०२१ को प्रातः १० बजे से अपराह्न १ बजे तक विशाल भवन में हुई। मैं अपने गुरुजनों एवं अनेक उत्कृष्ट वैदिक विद्वानों के निर्माणकर्ता स्वामी सत्यपति जी को नतमस्तक होकर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। -सेवक राम आर्य

आर्य समाज आदर्श नगर

महर्षि जन्मदिवस

१२.०२.२०२१। आर्य समाज के संस्थापक नवयुग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज का जन्म दिवस आर्य समाज मंदिर आदर्श नगर लखनऊ में आध्यात्मिक वातावरण में मनाया गया। प्रातः ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, भजन के उपरान्त वैदिक विद्वान् पं.सन्तोष कुमार वेदालंकार का प्रवचन हुआ। तदनन्तर ऋषि लंगर के आयोजन के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

ऋषिबोध पर्व

आर्य समाज आदर्श नगर के तत्वावधान में ऋषिबोध पर्व सोत्साह मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ एवं भजनों के पश्चात् महर्षि के जीवन और आदर्शों पर प्रकाश डाला गया। *(प्रधान, मंत्री)*

आर्य समाज इन्दिरा नगर

आर्य समाज इन्दिरा नगर वैशाली इन्क्लेव के तत्वावधान में ऋषिबोधपर्व आर्य समाज मंदिर में सोल्लास मनाया गया। वैदिक यज्ञ के उपरान्त विद्वानों के प्रवचन हुए। इस अवसर पर मुख्य वक्ता थे पं.अखिलेश शास्त्री। इसके अलावा श्री रामेन्द्र कुमार वर्मा, इं.डा.वेद प्रकाश जी, डोरीलाल आर्य इत्यादि ने अपने विचारों द्वारा शिवरात्रि की महत्ता और ऋषि दयानन्द जी के क्रान्तिकारी जीवन और आदर्शों पर प्रकाश डाला। *(डोरीलाल आर्य)*

पुण्य स्मृति

०६.०३.२०२१, शनिवार। स्व.सत्यप्रकाश श्रीवास्तव (अनुज श्री आदित्य प्रकाश

श्रीवास्तव, बैंक प्रबंधक, पी.एन.बी.) की पुण्य स्मृति में उनके आवास २६०/४, सेक्टर-२०, इंदिरानगर, लखनऊ में वैदिक यज्ञ का आयोजन डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञ में यजमान के आसन पर दिवंगत सत्य प्रकाश जी की पत्नी श्रीमती अल्पना जी, अपनी १५ वर्षीया पुत्री पीहू श्रीवास्तव के साथ बैठीं। उद्गाता, ऊध्वर्यु इत्यादि आसनों पर श्री आदित्य प्रकाश, श्रीमती सुषमा श्रीवास्तव एवं श्रीमती पूनम श्रीवास्तव, श्री अतुल चौधरी, अजय कुमार श्रीवास्तव आदि बैठे। श्री शरद प्रकाश, रिधिमा, मालिनी इत्यादि परिवार के अन्य सदस्यों ने यज्ञ में श्रद्धा-प्रेम के साथ भाग लिया।

आर्य समाज चन्द्र नगर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस १२ फरवरी २०२१ को जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ द्वारा आर्य समाज चन्द्र नगर में मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ यज्ञ से किया गया। वैदिक गायक श्री राधेमोहन जी, विदुषी महिमा जी, वेदमित्र जी तथा सोप्ति जी द्वारा भजन प्रस्तुत किये गये। आचार्य श्री सन्तोष वेदालंकार, श्री प्रताप कुमार साधक, आचार्य रूपचन्द्र दीपक एवं नवनीत आर्य ने अपने प्रवचनों के द्वारा ऋषि महिमा का वर्णन किया। इस अवसर पर डॉ.वी.पी. आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. ने कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज की। जन्म दिवस की पूर्ववेला पर जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में कर्नल अनिल आहूजा द्वारा प्रचार रथ से लखनऊ में प्रचार करते हुए वैदिक साहित्य एवं पम्पलेटों का वितरण किया गया जिसमें आर्य समाज चन्द्र नगर के मनीष जी एवं उनके साथियों द्वारा सहयोग प्रदान किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज चन्द्र नगर द्वारा भव्य भंडारे का आयोजन किया गया जिसमें मा.विधायक श्री सुरेश चंद्र तिवारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रबोध सागर आर्य, मंत्री द्वारा किया गया तथा श्री नवनीत आर्य द्वारा सभी का धन्यवाद व्यक्त किया गया। *(प्रबोध सागर जौहरी)*

योगी आदित्यनाथ का अयोध्या को वैदिकनगरी बनाने का संकल्प स्तुत्य है -कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य

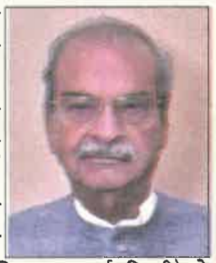

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की नगरी अयोध्या के विकास की सतत निगरानी कर रहे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा वहाँ के समग्र विकास के लिए बनाये गये 'विजन डाक्यूमेंट' में संशोधन के निर्देशों का प्रख्यात आर्यनेता कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य (पूर्व कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली) ने हार्दिक स्वागत किया है।

आनन्द बाबू ने अपने वक्तव्य में कहा है कि माननीय योगी जी ने साधुसंत श्रद्धालुओं और अन्य सभी पक्षों से विचार विमर्श करके अयोध्या को वैदिक नगरी के रूप में विकसित करने का जो निर्देश दिया है; वह स्तुत्य है। आनन्द बाबू ने कहा है कि वैदिक नगरी के स्वरूप की शोभा सरयूबाग में निर्माणाधीन ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका स्मारक न्यास के वेदभाष्य मंदिर से चार चाँद लग जायेंगे।

ज्ञातव्य है कि श्री इकबाल अंसारी से क्रय की गई भूमि पर वेदभाष्य मंदिर अयोध्या के वैदिक नगरी की रूप रचना में आकर्षण और सौन्दर्य का केन्द्र होगा। आपने आशा व्यक्त की है- योगी जी इस ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका स्मारक न्यास के वेदभाष्य मंदिर को अपना पूर्ण आशीर्वाद और सर्वतोभावेन सहयोग प्रदान करेंगे।

आनन्द बाबू ने कहा है कि योगी आदित्यनाथ जी वैदिक परम्पराओं के रक्षक के रूप में पहले से ही विख्यात हैं और उनका यह स्वरूप दिन ब दिन और भी निखरता रहेगा- इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है।

शिवरात्रि-ऋषिबोधपर्व का संदेश

आर्यजन संगठित होकर आर्यसमाज को शक्तिशाली बनायें

ऋषिबोध पर्व पर एक संदेश आर्यजनों के नाम प्रसारित करते हुए आर्यनेता कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य (पूर्व कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) ने ऋषिबोध पर्व पर बधाई देते हुए कहा है कि समय आ गया है, आर्यजन समस्त मतभेदों को भुलाकर संगठित हों, अपने संगठन को सुदृढ़ करें। वक्त बड़ी तेजी से बदल रहा है- इसमें अगर आर्यजनों ने अपने कर्तव्य को नहीं पहचाना तो वे पीछे रह जायेंगे और भावी पीढ़ियाँ उन्हें कभी भी माफ नहीं करेंगी। अतः सभी प्रकार के मतभेदों को भुलाकर एकता के सूत्र में आबद्ध होकर आर्य समाज को शक्तिशाली बनाने में जुट जायें। स्वर्णिम भविष्य आपकी प्रतीक्षा कर रहा है, 'संगच्छध्वं संवदध्वं' वैदिक नाद आपको पुकार रहा है।

अलीगंज संक्षिप्त समाचार

❑ श्रीमती सुन्दरी दरियानी की स्मृति में उनके पुत्र श्री हरीश दरियानी एवं उनके पारिवारिक जनों द्वारा अपने निवास स्थान एम.एस.१२१, सेक्टर-डी, अलीगंज पर ०५.०३.२१ को यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ वैदिक विद्वान श्री सेवक राम आर्य ने सम्पन्न कराया। श्रीमती दरियानी अलीगंज वैदिक सत्संग की प्रमुख सदस्या थीं। इस अवसर पर श्रीमती दरियानी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा श्री पाल प्रवीण ने उनके विशेष गुणों का वर्णन किया। कार्यक्रम में श्रीमती कमलेश पाल, अभिषेक, गीतांजलि, श्रीमती प्रमोद कटियार, श्री विनय कटियार, श्रीमती शशि रस्तोगी, श्रीमती निगम आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

❑ अलीगंज वैदिक सत्संग के प्रमुख सदस्य श्री द्वारिका प्रसाद शुक्ला की धर्मपत्नी का निधन २८.०२.२१ को हो गया। उनकी स्मृति में वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें अलीगंज सेक्टर-डी के निवासियों व शुक्ला परिवार ने भाग लिया।

❑ श्री राम किशोर पुत्र श्री दीप नारायण पूर्व प्रधान आर्य समाज के निवास स्थान सी-१७१, सेक्टर-जे, अलीगंज में ०६.०३.२१ को वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री सेवक राम आर्य ने यज्ञ सम्पन्न कराया। श्री रामकिशोर जी ने अपने सुपौत्र आयुष्मान अच्युत के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में यज्ञ का आयोजन किया। उनके परिवार के सदस्यों व सम्बन्धियों ने बहुत श्रद्धा के साथ यज्ञ में भाग लिया। श्री सेवक राम आर्य ने आयुष्मान अच्युत को आशीर्वाद दिया तथा वैदिक मान्यताओं को समझाया। *(सं.सू.-पाल प्रवीण)*

ज्योर्तिमयी शक्ति का अवसान

नही रहीं श्रीमती सरला आर्य

यह समाचार आप तक पहुँचाने में हमारा हृदय अवरुद्ध है, वाणी मौन है,

लेखनी कुंठित है कि गत २२ वर्षों से अनवरत प्रकाशित हो रहे आपके प्रिय 'आर्य लोक वार्ता' की समस्त शक्तियों, प्रेरणाओं और उपलब्धियों की केन्द्रीभूत महती शक्तिमती ज्योतिर्मयी- मेरी सहधर्मिणी श्रीमती सरला आर्य (७८) को क्रूर काल ने हमसे छीन लिया है और वे अब इस संसार में नहीं हैं। आर्य लोक वार्ता की प्रकाशन तिथि १५ (मार्च) को पूर्ण होते ही उन्होंने इस असार संसार से विदा ले ली। कर्मशीलता और वेदज्ञान की प्रतिमूर्ति श्रीमती सरला आर्य का अंतिम संदेश था- 'आर्य लोक वार्ता का प्रकाशन बंद न होने पाये तथा वैदिक विचारधारा और आर्य समाज के प्रचार प्रसार में कोई कमी न आये'। उनके इस संदेश के अनुरूप कार्य करने हेतु 'आर्य लोक वार्ता परिवार' सन्नद्ध रहेगा हमें आपकी सद्भावनाओं और सक्रिय सहयोग की अपेक्षा रहेगी। -डॉ.वेद प्रकाश आर्य

(विस्तृत विवरण अगले अंक में)

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निर्देशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
डॉ० वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-638/181डी,
शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप,
पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9651333679

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 7310119999

प्रचार प्रमुख
श्री प्रेम चन्द शर्मा
: 8799521631

नवोन्मेष
श्री कृष्णा जी

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	-	100 रु. वार्षिक
सक्रिय सदस्य	-	200 रु. वार्षिक
विशिष्ट सदस्य	-	500 रु. वार्षिक
होता सदस्य	-	2,000 रु. वार्षिक
संरक्षक	-	20,000 रु.
प्रतिष्ठापक	--	75,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-

बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक - आर्य लोक वार्ता
खाता सं.-46900 1000 00651
खाते का प्रकार-बचत खाता

प्रतिष्ठापक
श्री अरविन्द कुमार आर्किटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार

संरक्षक
डॉ.भानु प्रकाश आर्य, लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।